



Bibliothèque

917

ॐ नमः महादेवाय ॥
अथ महादेवविधि
विधिः ॥ ॥ यजमान
पूज्य राजनयाचका ॥ अथा
दिमासतत्कृण ॥ यथावाक्य
नसह ॥ श्रीसुखलज्जिका
नासने का कर्त्तुया ॥ उरु
स्नानं यागान् कर्त्तुया ॥
गृहार्थं का कर्त्तुया ॥ उरु
वै यथावा ॥ ॥ चरुत्वा
नरेवले ॥ ॥ तता कर्त्तुया
धनैः ॥ सुय्यार्घ्यं ॥ पुनस्तस्मा
न ॥ त्वासे ॥ ॐ शुभं ॥ अथा
यत्तु ॥ ॐ त्वादिना कर्त्तुया
गन्तास ॥ ॥ गंगदि
नजलया पुजते ॥ धनम्
जागमयतीति विद्यता ॥
॥ ॥ यत्तु ॥ गनैः अर्घ्यादेष्ट
जनैः ॥ कर्त्तुया ॥ तौ कर्त्तुया ॥

जायतमः ॥ यत्तु ॥ तत्तु ॥ वाय
पूर्ववक्त्राय नमः ॥ वैश्वदेवा
नामवाक्येन वक्त्राय नमः ॥
॥ देवामदवाय उरु नवका
यतमः ॥ नसया जाताय
यत्ति नवकायतमः ॥ क
र्त्तुया ॥ तत्तु ॥ उरु ॥ वक्त्राय
नमः ॥ अथावा ॥ यत्ति न
वा ॥ ॥ अतः पूजा ॥ ॥ क
र्त्तुया ॥ यत्ति न ॥ ॥ अ
तनमः ॥ ॐ शुभं ॥ अथा
न कर्त्तुया नमः ॥ ३ कर्त्तुया
वाय ॥ ३ कर्त्तुया ॥ तनाय ॥
३ नावा ॥ तनाय ॥ ३ कर्त्तुया
नाय ॥ ३ कर्त्तुया ॥ तनाय
न ॥ ३ कर्त्तुया ॥ तनाय ॥
॥ ३ कर्त्तुया ॥ तनाय ॥ ३
कर्त्तुया ॥ तनाय ॥ ३ कर्त्तुया
नाय ॥ ३ कर्त्तुया ॥ तनाय ॥

शं० सिद्धि विनाय शं० पाव
 तीक्ष्ण दयाय शं० उन्नय वाग
 विष्णु माय नमः॥ ग० ल० मू
 लमकुल विधा॥ वरुण॥ वलि
 आवाक॥ गज मूडा॥ ॥ जा
 य॥ क०॥ गज मूर्ख वा मरुट
 वयोदि॥ ० ॥ नमः॥ ग० म
 स पूजन॥ ॐ जा न न्याय नमः
 ॐ जा रुद्राय शं० ॐ हृणी लाय
 शं० ॐ जा हृम न साय शं० ॐ जा
 हृम ना ह वाय शं० ॐ जा ज ग ना
 ह र्या शं० ॐ जा य व ग म ह क र्या
 नमः॥ आवाक॥ आनि मूडा ॥
 जाया॥ क०॥ न न्या रुद्रा रुथा
 ही हृणी ला हृम ना ह वा य वि
 याय ना म य य व ग म ह र्या
 नमः॥ अ० ग० धादि॥ ॥
 कोमावी उगा हृजन॥ हं सा ह
 नादि आहत ट ॥ अ० व० क०

ल्येत नमः॥ क० मा हृम य शं० व
 कोमाय शं० ट व० क० य शं० तु
 वा ना क० नमः॥ य० ह० द्या॥ ल्य
 शं० य० वा म० लु० य० शं० ध० म० ह
 ल० क० नमः॥ ज० का० की० ह० क०
 को० क० क० को० ना० वी० द० यो० या
 य॥ ॥ वि० धा॥ आवाक
 जिनि पू० खा मूडा॥ ॥
 जाय॥ ॥ क० प्र० वाल० ला० व
 म० हा० वी० डी० ला० दि० वा० क० न
 ह० ह॥ अ० ग० म० धा० दि॥ ॥
 नमः॥ य० व० माल० पू० ज० न॥ व
 ध० वा० ट० सा॥ ॐ जा० जा० हृ० हृ० य
 य नमः॥ ॐ वा० वा० वृ० सो० मा
 य शं० ॥ य० ध० वा० ट० सा॥
 ॐ जा० जा० हृ० अ० ग० म० ना० य० शं०
 ॐ जा० वा० वृ० व० द्या० य० शं० ॥ था
 था० वा० ट० सा॥ ॐ जा० जा० हृ०

ॐ ह्रस्वतय २ ॐ डां डां इयु
काय २ ॥ मध्याटस ॐ
अंगीरानिधनाय २ ॐ
कांकां कटव २ ॐ डा
जोई जलन २ ॥ ॥ दध
याटस ॐ डां डां नाहव २
ॐ ॐ ॐ कनवीनमम
नावियतयनम ८ ॥ वलि ॥
आवाक ॥ धूप दीप ॥
जाया ॥ धूपमस्तु ॥ ॥ सा
जा ॥ हृयसा मामहीपुव
धदवमनारुगु ८ ॥ नाति
नगुहोना ८ ॥ ककुजम
नमस्तु ॥ अंगीरानिधनाय २ ॥
ॐ तियववालपूजा ॥ ॥

तमाकणवलिपूजन ॥
ककावला कवअमन्या
म ८ ॥ जलयोप ॥ अर्घ्या
जा ॥ रुमगुडि ॥ आसपूः

जन ॥ विदव यानिती ॥
वलि ॥ आवाक नूजा ॥ ॥
वकांकादि ८ ॥ अवाक ॥
वजा ॥ वतीनि ॥ धतनवलि
॥ ॥ गमथाय शल ॥ अथय
यासुलमस्तु ॥ विवजलि
॥ कंग्यामस्तु ॥ विव ८ ॥
उम ॥ वलि ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ
आयकट ॥ अरुनीनम ८
मेखटके २ ॥ नातिवलि ८
का २ ॥ खाहा ॥ कपनी २ ॥ मम
नवातिन्य २ ॥ खेवर्थ २ ॥
ॐ ॐ यानिन्य २ ॥ ॐ ॐ ॐ
वाय २ ॥ विकटाधय २ ॥
लवकवत्येनम ८ ॥ हह
कालजीसकुं कुकालजी
सयानितीयावलि ८ ॥
खाहा ॥ वाकमहावलि
नपूनेका ॥ ॥ धूप दीप

जाय॥ ॥ कृष्ण॥ सुदुर्दम
 लयन्विता रुक्मपुष्पादिः
 मालासिका कृष्णलवङ्ग
 हस्तहर्षहरनाहलस्य
 नाथविचित्रमममममम
 ननाधिवदवदका
 कादिइष्टस्वायहानित्या
 नन्दमयतमासिमिमसा
 वल्लादिपूजाविधौ॥ न
 यति॥ ॐ नितिकरुवलिपू
 जा॥ ॥ तमाकरुपूज
 नीमूधानाकुलकमज्ज
 नित्याम॥ ॥ जलपात्र
 अर्घ्योपपूजनं॥ विद
 दयानिती॥ वलिआवा
 क्सूडा॥ अमिताभमदि
 ट॥ वक्राव्यादि॥ ॥

ॐ ज्ञानां ॐ कलक
 रुक्मिणी ॐ कलक
 निवृत्ति ॐ कायज
 लि ॐ सुकर्म
 पाप॥ विधौ॥ वक्रा॥ अ
 धानाज्ज॥ ॥ वरुखनत
 संपूजा॥ वलि॥ ॥ धूपदी
 या॥ ॥ जाय॥ सकाव॥ १०॥
 कृष्ण॥ वक्रा॥ सोयंयादि
 अर्घ्यगंधादि॥ ॐ नितिक
 रुक्मजा॥
 तमाथलिलियुजनी॥ वतीनीत्या
 म॥ ॥ जलपात्र अर्घ्यपात्र॥
 हस्तगुह्यासपूजा॥ ॥
 मालिनी॥ यक्षवलि॥ ॥ वि
 दवयानिती॥ वलिआवाक
 मूडा॥ तथ्यल॥ ॥ ॐ द्यादि॥

ययादिटा॥ वज्रगकिनी॥
 वृक्षादिटा॥ चिबुषी०४
 अथाना॥ वज्र॥ वतीनि॥
 (मथमयश्लं अथमययामूल
 मरुतनियजैलि॥ वज्र॥
 वलि॥ रुकाव सुकाव॥ धनसं
 थव॥ मरुतन वैलि॥ ॥ ध्वप॥
 दीया॥ जाये॥ स्मरमालक
 ॥ वृंतिथिलि सपुजा विधि
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 पुनमासहारववाय॥
 ततामृनिकार्थकारयत॥
 अथादिमासनकणादि॥ सु
 यार्घ्यावर्तुनैवाजमध्वरु॥
 ॥ ॥ युनतमस्कानादि॥ न्या
 स॥ अमुद्रायरुटा॥ कवगमध
 न॥ जाकतिष्ठकायेनम॥ जोअ
 नात्तिकायस्वाहा॥ अमध्वमाय
 वीषटा॥ अतज्जमायेदू॥ जोअ
 युकायेवषटा॥ अमुद्रायरुट
 वृंतिकनन्यास॥

कं वृंमनाथाइवकायनम॥
 यंतसूत्रमायपूर्वकायनम
 ॥ लंमृधानायदकिनवकाय
 नम॥ वंवासदवायउरुनव
 जानम॥ लंसयाजानायपदि
 मवकायनम॥ कं वृंमनाय
 पुडाइवकायनम॥ वृंतिवर्क
 न्यास॥ ॥ जोददयायन
 म॥ जोमिप्रसवाहा॥ हलिखा
 येवीषटा॥ अकवचायदू॥ जोन
 उरुयायेवषटा॥ अमुद्रायरु
 टा॥ वृंतिजुगन्यास॥
 जेलयाय अर्घयाय॥ रुतमुद्रि
 आत्मपूजा॥ ॥ उजाजिह
 यानिखास्वकृतमहारववाय
 नम॥ निनीकता॥ स्नानदक्षिन
 माय॥ अमुद्रायरुटा॥ प्राकटी
 अर्घयायदकनसिंयेयता॥
 अमुद्रायरुटा॥ वाकाय॥ जो
 ददयायनम॥ वाथना॥ जोमि
 नसंस्वाहा॥ माथहाना॥ अकव

पूजा विधिः॥ ॥७॥

अलास सिनकाता ॥ कृष्णयू २
 यादयकावकृष्णयान्तिता ॥
 वरु सिन्दूर ॥ अजामका हा
 नता ॥ ॥ वक्राप्रतितावा
 प्र अर्घ्याप्रयालखनहाथ
 ॥ अमृमल्लन ॥ मसयान ॥ अ
 मृमल्लन ॥ ॥ अमृमल्लन
 लखथान प्रवितयाप्र ॥ वृ
 हि साइद कृष्णयान्तिता ॥
 वक्रास्त्र दकि (लंकायन) ॥
 वाक् ॥ यानयान वयवार्द्रि व
 क्ताल वृक्षानन हं सजानप्र
 ताकाण दधु कृष्णमधुल
 ॥ ॥ यूजन ॥ उवक्र (लानमः)
 उ प्रजापतय नमः ॥ उ सर्व
 थाय वंथानमः ॥ उ जाहसा
 सनाय नमः ॥ उ जावक्र मूर्त

यं तमः॥ उक्ता वक्ता यतमः
॥ अतः संयुक्तः॥ आवाः
॥ यत्तमः॥ अतः वक्ता
युजा विधिः॥ ॥३॥

प्रलितयात्र स्ववामि स्थापनं ॥
 वाक्का ॥ अतस्तं धून्वनी का कं
 रुतातादिभुतयुतं ॥ विशुद्धा
 मप्रतीप्रतीकां कूमावृष्टं
 प्रपूजयता ॥ ॥ पूजनं ॥ ग
 नूजसनायेतमः ॥ ॐ क्रावि
 श्रु मूलय नमः ॥ ॐ क्राभूति
 र्या नमः ॥ ॐ क्राप्रतिताय
 नमः ॥ ॐ क्रावेष्वेव नमः ॥
 ॐ क्रासर्वस्यादवस्या नमः
 प्रउरुनसंपूज ॥ आवाक
 धनमूडा ॥ ॐ तिप्रलितया
 प्रपूजाविधिः ॥ ७ ॥



तत्तायुक्कयुवा (साधनं) ॥ अशु
 नया कर्तुं ॥ अशु ॥ अशु नि स
 यन ॥ धान ३ ॥ कृणू कृ णि य
 युहायकायाव ॥ युवा स्य नम
 नं ॥ ॐ क्रां मुद्रा वक्र (६) अ
 सः त्वायनमः ॥ युवायालस
 कृणूयायालनथिय ॥ ॥
 ॐ क्रां मुद्रा विद्या तत्वायवक्र
 वतनमः ॥ युवाम (६) कृणूया
 म (६) नथिय ॥ ॥ ॥
 ॐ क्रां मुद्रा गिवतत्वायनूद्रा
 यनमः ॥ युवायाचास कृ
 णयाचा नथिय ॥ ॥
 ॐ अशुक्राय रुद्रा युवासमा
 नं ॥ ॥ युवासेलखथ
 नमः ॥ ॐ क्रां निखानाथा
 यविमह स्वकृन्दायधीम
 ह तन्ना नूद्रा प्रचादयाता ॥
 ॐ अशुक्राय रुद्रा युवासकृ
 णयाचा नथिय ॥ ॥ युवासेलखकाया

वयुवासेत ॥ ॥ अशु तधा
 नः ॥ स्वन्ननववलखलाल
 या ॥ ॥ युवानशुनिक
 दायक ॥ धा ३ ॥ युवायाल
 खप्रमितयायसते ॥ अशु
 सेत ॥ ॥ युवा नित्री ॥ दि
 ययु संस्कार ॥ यंचसृगका
 वकलूगवाहित मरु ऊक
 वचायद्र ॥ ॥ वरु सिन्दूर
 यज्ञायवीत स्वातत ॥ ॥ कृ
 मसतत ॥ ॥ यूजन ॥ ॐ क्रां
 क्रोतिवायनमः ॥ ॐ क्रां क्रो
 वानकनमः ॥ ॐ क्रां क्रो
 युवासीनमः ॥ ॐ क्रां क्रो
 क्र ॥ ॥ स्वदकि (६) कृणूया
 यावि युवास्त्रायनी ॥ ॐ ति युवा
 पूजा विधिः ॥ ॥ ७ ॥
 अथधवक्र (साधनं) ॥ अशुया
 ययालखनहाया मरु ॥ अशु

काय रूपा ॥ अमुन अग्नि सदा
ना धारय ॥ यदुवान धव कस
धल तथा ॥ हृदय मनुन ॥ अग्नि
कलुया ॥ अग्नि को लस धल को
नका ॥ ॥ कृणय कि न गुति
धव कसता ॥ घृत पि रा गध
॥ य कि न न ग ॥ ॐ जा अग्नि य
स्वाहा ॥ वा स न ग ॥ ॐ जा सा मा
य स्वाहा ॥ ॥ र ती य न ग ॥ ॐ
जा अग्नि सा मा यो स्वाहा ॥ ॥
घृत रा ग या थ ॥ कृणय कि
यदुवान का या व ॥ ॐ गान
को ल स ध य म कु ॥ ॐ जा अ
ग्नि सृष्टि कृ त ल्य स्वाहा ॥ म
॥ ॥ कृणय कि ता ॥ धन मूडा
॥ ॥ यज मान आ य य का
वा क्सा ॥ ती न य था रु वं ज स्मा त
जग य य प्र सृ य ता न मा मि ते
द हं लि मं य कि मा य कि मा

म त ॥ आर्य पा य ह न दृष्टा आ
र्य पा य ह न य नो आर्य सु नो ता
सा मा हा सु र्व आर्य प्र ति स्ति ता ॥
आर्य न दे वा ॥ सा य ति य रु
आर्य प्र ति प्र ति स्ति ता ॥ ॐ ति धृ
ता व ला क त ॥ ॥ ॥

त ता घृ ता कृ ति वि स्यं हा ॥ ॐ रु
॥ स्वाहा ॥ ॐ जा रु व ॥ स्वाहा ॥ ॐ
जा रु वे त य त य स्वाहा ॥ ॐ रु ता
ता य त य स्वाहा ॥ ॐ जा रु य वा
ह ता य स्वाहा ॥ ॐ जा जा त वं द
स स्वाहा ॥ ॐ जा का ला य स्वा
हा ॥ ॐ जा का ल यू न या य स्वा
हा ॥ ॐ जा सा मा य स्वाहा ॥ ॐ
जा मृ त्यु ज या य स्वाहा ॥ ॐ जा
य मा य स्वाहा ॥ ॐ जा वै व श्वः
ता य स्वाहा ॥ ॐ लु वा स धृ वा
ता ॥ ॥ योग त ॥ ॐ जा अग्नि

ताम्ररेन वायनमममपूजनं ॥
॥ आकृतिविधमस्तु ॥
ॐ जागर्तधनाय स्वाहा ॥ धनं
धृताकृति ॥ पूजनं ॥ ॐ जानू
रेन वायस्वाहा आकृति ॥ ॥
ॐ जागर्तधनं पूष वज्रयि स्वा
हा ॥ पूजनं ॥ ॐ जाचतुलने वा
यस्वाहा ॥ आकृति ॥ ॐ जागि
स्वायमीमता नयनाय स्वाहा
या ला ल्या रव ॥ पूजनं ॥ ॐ जा
जोद्वक्रिस्तम्युत्तममलाय
स्वाहा ॥ धनं आकृति ॥ ॥
मनीव वक्र गमकला लय ॥
पूजनं ॥ ॐ जाजोद्वक्र दममग
हं पूषुत्तममलाय स्वाहा ॥ ध
नं आकृति ॥ ॐ जाजोद्वक्र
वाय स्वाहा ॥ ॥ पूजनं आकृ
ति ॥ ॐ जाजगत्कर्मणाय स्वा
हा ॥ ॥ धनं ॥ जाटव

जागकस्तानि धर्मन जागमा
कृति ॥ जागानि ध्यान कूर्व
ति ॥ जातिवृषं विचिक्तयत ॥
पुर्वकमालतीदक वासने
किंकमस्तु ॥ मवाभूदुजय
द्वं मयजिज्ञानमाम्बुह ॥
नीलोत्पलदलाकारं लं नवा
गिद्वतासनं ॥ जातिवृषं यन
ध्वात्वा समस्तं स्वकृत्तलं नव

गता वक्र विक्रवती ॥ यन्निम
ॐ जाजोद्वक्र तया जागयय
निमवक्राय स्वाहा ॥ उरुन
ॐ जाजोद्वक्र वामदवाय उ
रुन वक्राय स्वाहा ॥ दकि
लो ॥ ॐ जाजोद्वक्र अर्धनाय द
किणवक्राय स्वाहा ॥ पूष ॥
ॐ जाजोद्वक्र यन लूनवाय पू
र्ववक्राय स्वाहा ॥ मध्व ॥ ॐ

जोहं कं ह्रीं गताय उडवका
यखाहा ॥ जकीरुत्ता वकुकि
नगी ॥ उं जोहं कं यधि मवकु
यखाहा ॥ वाथकाव ॥ यं हायक
बुडवान धल हायक ॥ ॥
उं जोहं ववो मय वाय उरुन
वकाय खाहा ॥ यं विन न यथं
न ॥ ॥ उं जोहं ल अघा नाय
दकि वकाय खाहा ॥ यं विन
न वाथान ॥ ॥ उं जोहं यं न
सूरमाय यूव वकाय खाहा
॥ वेदाना हायक म (ध) सहा
यक ॥ ॥ उं जोहं कं ह्रीं गता
नाय उडवकाय खाहा ॥ यं क
लित यथं काव म (ध) सहायक
॥ ॥ उं जोहं कं ह्रीं गताय
उडवकाय खाहा ॥ यं कलित
व कलित थं म (ध) सहा ॥ ॥ उं

जोहं दकि वकाय खाहा ॥
पूजन ॥ उं जोहं मरु नवा
यखाहा ॥ ॥ अघा नाय
खन हाय ॥ ज अकाय रुदा
उं जोहं यं सूरत कना माय खा
हा ॥ अरुति ॥ ॥ पूजन ॥ उं जो
कयाली सूर नवाय खाहा ॥
अरुति ॥ उं जोहं दकि व
काय जोहं कं ह्रीं गताय
खाहा ॥ ॥ वरूथ
या ॥ पूजन ॥ उं जोहं दया
यन म ॥ ॥ अरुति ॥ उं जो
रुत पासनाय खाहा ॥ पू
जन ॥ उं जोहं वरू नवा
यन म ॥ ॥ अरुति ॥ उं जो
अन पासनाय खाहा ॥ पू
जन ॥ उं जोहं सूर नवाय
न म ॥ ॥ अरुति ॥ उं जोहं द
कि वकाय क उरु दाय खा

हा। कृगवानरुसयनखन॥५॥
 जन॥ ॐ काकुपीगिरवास्व
 न्दमहाएनवायनम॥ ॐ क
 ति॥ ॐ काकुस्वचन्दमहा
 एनवायवृगवधनास्वाहा
 । पूजन॥ ॐ काकुदयायन
 म॥ ॐ काविवायस्वाहा॥ वि
 वाह॥ दीकाविधा॥ षड॥ न
 ना॥ ॥ आकृति॥ षड॥ न
 ॥ ॐ कासहानरुववायस्वा
 हा॥ धन॥ ओ॥ कृति॥ ॥५॥

ह्यागमयालयत॥ प्रलिन
 पाप्रसता॥ ॐ कावागन्ध
 येनम॥ ॐ कावागनीन
 म॥ वागन्धनीपूजन॥ ॥
 गताजिक्कासंधान॥ ॐ काकु

हिमल्लायस्वाहा॥ नेमत्य॥
 ॐ काकुकायस्वाहा॥ प
 मिम॥ ॐ काकुकायस्वा
 हा॥ वायुय॥ ॐ काकुका
 यस्वाहा॥ आ॥ न॥ ॐ काकु
 सुप्रणयस्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ
 काकुअतित्रिकायस्वाहा॥ ॐ
 ना॥ ॐ काकुसुवकनूपाय
 स्वाहा॥ म॥ ध॥ म॥ जिक्काकल्प
 नघृतधानाकुरुयाता॥ नेम
 त्यादि॥ म॥ ध॥ म॥ ॐ काकुबुबुहि
 नल्लकनिकायस्वाहा॥ नेमत्य
 वनूत॥ वायुय॥ ॐ काकुबुबुह
 कायसुप्रणयस्वाहा॥ अ॥ ति॥
 पूर्व॥ ॐ काकुबुगुनकककाय
 स्वाहा॥ वायुय॥ अ॥ ति॥ ॐ का
 बुगुसुप्रणयअतित्रिकाय
 स्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ ना॥ ॥ क

अस्माय स्वाहा ॥ षट्त्रिंशद्
नी ॥ उक्ता वेद नूपाय स्वाहा
सर्वसाधनं च तन्मया ॥

तता च तान्ति विष्णुं हा वि
द्वयं आग्निनी ॥ ४० ॥ द्वादि
॥ उक्ता लू ॥ द्वाय वज्र हस्ताय
सूना धियतय स्वाहा ॥ उक्ता
नू अग्नेयं ग कि हस्ताय तजा
धियतय स्वाहा ॥ उक्ता मूज
माय दधु हस्ताय प्रता धियत
य स्वाहा ॥ उक्ता कृते अर्थाय
ना कसा धियतय स्वाहा ॥ उ
क्ता वूव नूपाय याग हस्ताय
जला धियतय स्वाहा ॥ उक्ता
यूवा यूपाय ध्वज हस्ताय य
वता धियतय स्वाहा ॥ उक्ता सु
व वनाय गजा हस्ताय धना धि

यतय स्वाहा ॥ उक्ता दू ॥ ४० ॥ मा
वाय जिगृह हस्ताय रता धि
यतय स्वाहा ॥ उक्ता मू अग्ने
काय वज्र हस्ताय तामा धिय
तय स्वाहा ॥ उक्ता उव कला
यम हस्ताय स्वर्ना धियतय
स्वाहा ॥ ४० ॥ तिलाक वाल ॥ ॥

अथ रुद्रकादि विष्णुं ॥ ॥
॥ उक्ता रुद्रक कण्ठया लाय स्वा
हा ॥ उक्ता गिगृह कक कण
या लाय स्वाहा ॥ उक्ता अग्नि
वेताल कण्ठया लाय स्वाहा ॥ उ
क्ता अग्नि जिह्वा कण्ठया लाय
स्वाहा ॥ उक्ता काला कण्ठया
लाय स्वाहा ॥ उक्ता कनालीन
कण्ठया लाय स्वाहा ॥ उक्ता व
कया दक कण्ठया लाय स्वाहा ॥

ॐ कांक्षी मन्त्रय कण्ठ्या लाय
स्वाहा ॐ कांक्षी मन्त्रय कण्ठ्या
लाय स्वाहा ॥ ॐ कांक्षी मन्त्रय कण्ठ्या
लाय स्वाहा ॥ इति ह
उक्तादि ॥ ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ क्रां प्रयाग कंठ वालाय स्वा
हा ॥ ॐ क्रां वरूण कंठ वालाय
स्वाहा ॥ ॐ क्रां काल पूर कंठ
वालाय स्वाहा ॥ ॐ क्रां मूढ हा
स कंठ वालाय स्वाहा ॥ ॐ क्रां ज
यन्ती पूर कंठ वालाय स्वाहा ॥
ॐ क्रां चक्रि कंठ वालाय स्वा
हा ॥ ॐ क्रां उका मुक कंठ वा
लाय स्वाहा ॥ ॐ क्रां दवी काट
कंठ वालाय स्वाहा ॥ ॐ नमि प्रया
गदि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तमाश्रुनिताम्नादि॥

ॐ क्रां भूतिताम्रं नवाय स्वाहा
 ॐ क्रां नूतनं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां चतुर्लोकं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां प्रादुर्भूतं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां उत्तमं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां कथां लीलां नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां शीघ्रं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ क्रां सहायं नवाय स्वाहा ॥
 ॐ नूति भूतिताम्रं ॥

अथ वक्रादि ॥ ॥

ॐ क्रां प्रवक्त्रा ये स्वाहा ॥ ॐ क्रां
 कं मा हं व यं स्वाहा ॥ ॐ क्रां च को
 मा यं स्वाहा ॥ ॐ क्रां ट वं प्र यं स्वा
 हा ॥ ॐ क्रां त वा ना ये स्वाहा ॥ ॐ
 क्रां यं जे द्वा न्ये स्वाहा ॥ ॐ क्रां य
 वा मू उ यं स्वाहा ॥ ॐ क्रां णं म हा
 लं स्वाहा ॥ ॐ ति वक्त्रा य्वा दि ॥

ततो कलगायत आरुति ॥
मन्त्र ॐ शंख ४ स्वाहा ॥ गल ॥
ग्राम ॥ कृष्ण कल ४ ॥ ॥
या छिलियात आरुति विथम
॥ हरे हरे स्वाहा ॥ ॥ यं
बालयाग ॥ ॐ जा जा हू हू
शाम ॥ अंगन वृद्ध ॥ हरे हरे
लुक्क गन श्वर कंठ ना हू ॥
मनैय ४ स्वाहा ॥ ॥ ॥
मवग्रह ॥ ॐ जान वग्रह ४
स्वाहा ॥ ॥ कृष्ण वलियात ॥
कृष्णयागी ॥ हरे स्वाहा ॥ यं
ववलियात ॥ ॥ ॐ जा व
कमूल स्वाहा ॥ ॥ ॐ जा विष्णु
व स्वाहा ॥ वक्रा प्रविगयात ॥
वृद्ध विद्याग ॥ ॐ अ (वदाय
स्वाहा ॥ ॐ अ यूर्ध्वदाय स्वाहा ॥
ॐ सामवदाय स्वाहा ॥ ॐ अथ
वर्नवदाय स्वाहा ॥ ॥ अग्नि

द्ववद्वद्वलियात आरुति ॥
ॐ लो ४ ॥ दाय स्वाहा ॥ ॐ ना अ
नय स्वाहा ॥ ॐ माय माय स्वा
हा ॥ ॐ को न ज याय स्वाहा ॥
ॐ वाव वृद्धाय स्वाहा ॥ ॐ या
वायु याय स्वाहा ॥ ॐ सा हू व
नाय स्वाहा ॥ ॐ हां वृद्धाय स्वा
हा ॥ ॐ अ अत नाय स्वाहा
॥ ॐ ॐ वक्र स्वाहा ॥ ॥
ॐ ति दि ग्यात ॥ ॥ ॥
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
दं ना यात न ॥ हूय ना नाय
व हदा निव गल न (मीनी
धत यं वाय न ॥ ॐ ॥
यगु य निरु ॥ वायु कि ॥ वृद्ध
नांश ॥ व (वृद्धनी ॥ वृद्धा किनी
वृद्धा ॥ ॐ वृद्धा ॥ ॐ वृद्धा
नी ॥ ॐ वृद्धा ॥ ॐ वृद्धा ॥ वृद्धा
वृद्धा ॥ वृद्धा ॥ वृद्धा ॥ वृद्धा ॥

सोराएयन्वना। सासपि। जा
तिमल। नदिसागनरुगव
ति। तादव। राजदयुलि।
दखमाउ। नखुहा। मगिला
॥ कमलातीथओदिन नव
यी० अरुमाहका मध्ययी
० त्वं॥ लोमसुन॥ ॥ नाट्य
व॥ थानगलोन॥ ॥
विदव यागिनी॥ नकाव
इमाशुओदिन दूवतयासा
नकासुविथ॥ धनसु धव२
मकुन द्युताकृतिविथमाल
॥ पूरुषातओरुतिविथमकु
॥ ओझीरुसुकुन्दमहाहरेव
यखाहा॥ धवज४॥ ॥ पू
रुषाका॥ उकावा माउ या
उलसव॥ नकिपातववायमा
कतवहाप्रकाकरुमिलका
मज४ पूजसनाकलायवकला

वालाकहावागुहा। मायाय
कविथकनककालितंमूलच
विधिसिका। जगतीनामिसम
सुकासजनी। नकिचपासा
हवी॥ द्युताकृतिपूरुषाहमद
रुमुखाहा॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तताहामयागलधन॥ कओ
कायरुद। अरुधयागलखन
हाया। अग्निसयाता। अरुम
कतधन३॥ वतखसिकचा
यलका। हामल। अकतद
इधलिधनकसि। अलिवा
लोसिधुनिकाया७१। निवधि
कोलाकिहायकपूर२। अइवा
वपाठ२। जयमाला। धनहाम
वाउसतयाव यजमानस्यल
वकावका॥ ॥ वाक्य। नमोमि
यावकातजयविजसर्वकर्म

ह्यवेक्ष्यतनामहाभुजं दवाता
 ह्यदायकं सर्वकर्मलिमाकि
 त्वं आश्रयजतकावकं आश्र
 योदिसिताथयपुलाकहित
 काम्ययो। संयुक्तं नूतित्यानि
 यत्कर्मसिदानिच आश्रया
 यतममृत्युनमस्तुमाकिदाय
 कं। दधिहोमं पूजायुक्तिं काव
 हासं नमातिकं। यत्सासं तुष्ट
 तं कृत्वा नागयाधिविनागर्त
 नाययुक्ता किलेहमात आ
 युष्टिद्विर्जयकृता। युष्टिः सव
 सदाहोमं शिषूकं सुलुलेषि
 यं। अर्कं लोहं सहितायाधि च
 लयालासकामदी। खर्कं लोहं
 र्थलागाय अयामाहर्नवकृपू
 षकं। समीपं मयतं पापं सोला
 ग्मं मधुपूजय। अश्वत्थं लोहं
 तं कामं दूषा आश्रयं वदने

कृणुष्वेधिरंजीवं प्रत्यायु
 कामनार्थकं। आयुः प्रियं वक्त
 ल्यातं वृषया धनातिव। ल
 वतां पुनू प्रसादत सर्वकार्य
 वसिष्ठयं तावाक्। आवाया
 यमूलं लोहं दद्यात्तु यथाह
 यामि॥ ॥ यजमानस्य हव्य
 पात्रं लवकाय॥ ॥ वाक्का
 दतादिविषं॥ ॥ आवाय
 नहव्यपात्रं गायत्रीतजयल
 या। यत्तु पूजते॥ ॥ वा
 उगसमिध आसनतययुः॥
 ॥ ॥ वाक्का॥ त्वमेतन्नीध्वनं
 तं जं यावतं यवमंददितस्मा
 त्त्वदीयं दद्यात्तु संस्थाप्यत
 व्ययामित॥ धनं अग्निस्तु
 वार्थनायाय॥ ॥ ७॥



तमातिलाकृतिविस्मं ह॥ घृ

तादृगिविद्याकथना ॥ ॥
विदवादिन सनस्कृतुलिघु
तादृगिविल उमि तिलाइ
मिखाइत विंयमाल धोन
३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थुवान थियक ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रुदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कोमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
पूषा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
म्याल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लपू ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लाग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कंय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
४क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
पिंग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

थव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
आइति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मही ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मला ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यात ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विधि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विष्णु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कर्व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
संश ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वेय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
पूषा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वानि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थिय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

तमादवाचनं । अथ यथा अत्र
 कुमल पूजा ॥ धूप दीप ॥
 जाप ॥ स्तोत्र ॥
 यंत्र मंत्र कान्त दंड हिंदाव
 आचार्य स्यात्तादाव ॥
 विदवादिथव ॥ सक्तुर्न आ
 दूतिविथ ॥ ॐ ज्ञो ज्ञो स्वाहा
 धार ॥ निरथि ॥ स्तोत्र ॥ गजा
 नन्दन हस्तिन जवदना नाणा
 यवीमाधनी आदीपूजित सर्व
 कार्यसमर्थ कुरु देव शक्ति
 ला ॥ मूसासीन गवन्धनायि
 गवान् विष्ठादिविध्वंसितं न
 सुखं येषां मादकादिदं न
 धार सदायातु व ॥
 ॐ ज्ञो ज्ञो स्वाहा ॥ निरथि ॥
 स्तोत्र ॥ गोत्री नन्दन चावूवद्
 कोवका मन्त्रे उषिता वन्धका
 यमद रुकाति सकलं धानील
 कलासर्त ॥ खड्ग शायुध धार

कोउमरू(ध)रूटावलीराजि
कंयायाकीवदूकोरुमप्रति
दिनेयूयासुधवधन॥

उजाकाकंपयालायखाहा
निवधि॥सा॥

॥कंयायय
वमापिनीलवदनेख(प्रुह
रूजामलीग्राजिभूग्नजवम

संदतधनखदामयातिवः
।यतागमसनदवलीबलमुख
यीकंपयालावलीयायाडीर
वताहिसततंअसीउलाकली
तायहा॥

उजाअं वक्रायतीखाहा॥नि
वधियलास॥सा॥सोम्यानि

यीववदनेकमलातेनशासा
कमरूविधृतानितहंसयाने

यीताखदावतसदासुनवदमा
तातस्मैतमाधुसुततंअउना

नतावे॥उजाकमाह
न्यनीखाहा॥निवधिअरू॥

सा॥(म)कीवायमदहकारि
धवला(म)नामसंचाविलीकय
लूनतिवासिनीरुगवतीगीता

लेदकाहता॥आ(न)य
यनिवाहिनीपिनयनीपेला

कसंपूजिनीरूडागीउजग
अउधलयनीकानादितेस
वदा॥

उजाअंकोमायखाहा॥निव
धिखयदा॥सा॥कोलापूव

सुनतुव्यायकसदासिन्दूरव
(प्रुह)लाडाकि०सायधधनि

लीमयूनगमयीपातयेगाइ
ता।नातायायकधसिनी(गु

रुकरािमलावलीपूजिनीको
मावीववलासिनीनिपूदनाद

वीसदायाउव॥

उजाटवेधुखाहा॥निवधि
वलंगता॥सा॥नअखयनि

वासिनी स्वगता दूर्वा तलाह
तत् दूर्वाग्रामसिद्धिं स्वयं
धनलीक्षीमादकी वंशवी । के
न स्मदकठम्वदकतलगद
स्यामि विध्वंसिनी साधवी पुद
दुतं कृतधनं प्रोवाह हासा
हिता ॥

ॐ ज्ञातवानां स्वाहा । गिनधि
इमं न ॥ ॥ स्तोत्र ॥ को ज्ञातवान
लवर्गुसतिरेतत्मीनादृता
योवनी लूला पारुमह हाहि
तकदा कीतोयुधसंस्तुता । हा
जलकृतमूलमालधनलीदा
वाग्निर्कला कला वानूष्मादि
वासिनी लय कवी वका कना
हुजताता ॥

ॐ ज्ञायते तस्मात् स्वाहा । गिनधि
सतिक ॥ ॥ स्तोत्र ॥ मातृ
न्यनयुष्टया नगमनी दम्भासि
संक्रावृता वैविशा कलकयध

नितसदा वंयायमावर्तुनी । ॐ
जाती सून पूजनी सूनयनी वायु
यका श्रुतो याया सा रुवताम
कल्पहावृता सुना घातिनी ॥
॥ ॐ ज्ञायतामू अथ

स्वाहा । गिनधि वृत्ति ॥ ॥ स्तो
त्र ॥ दुर्गा इमं न वासनी रुगत
नूवता वसंता हिनी । वामू अहि
तली वली प्रकटिराडुका कला
धनेनी । स्वयं रुत कवातवान
नधन ४ पी विदु मूडा धनी कीव
लासुत च लुका गत न विठुल्या
निर्वाहवः ॥

ॐ ज्ञातमहाल स्वाहा । गिन
धिक ॥ ॥ स्तोत्र ॥ देवी काह
मनाहवा सुवदनं नृगानदिः
वासिनी ये वा स्या रुमदहग
मिति सदां पूजुं इव ॐ किला
। विशूकाटि समान कलुलध
नी हाना वली रुवनी लक्ष्मी प्रक
महा नूहा वेल दिना या यारु

वृत्तः सदा ॥ ६०३ ॥

कुंजायायागिनीयासाहा। नि
वथि। सिद्धवर्जसहस्रनव
चावृत्तंगोनेकास्त्रवाचतस्व
रातवमूषुमाला। कायाद्भुता
रुवयूतामिषमिन्दुहस्ता। त
स्नेतमाशुसतर्तकलथागमा
गो ॥ १०८ ॥

ततात्यासतदव(स)प्रयत ॥

ध्मन॥ जीवत्यास॥ प्राणप्रति

ष्ठा ॥ दवयोदहाक्रियातआ

रुतिविषय॥ (स)कदवश्लो

उकदवयासुततआरुति

१०८ ॥ ॥ प्रतिष्ठायाय ॥

प्रतिष्ठितासिद्धवनिमूषतिरु

उवतर्ग्य। सानिध्वप्रतिगृह्णा

ति यजमानायुद्वय। सत्ता

मुतिवदलानसत्तावाक्ये

वयायजमानस्यवृद्धयस्वयू

ययनुवाध्व। नकलसर्वका

लक्ष्मद(स)विनमाहुत ॥ ॥

सुप्रतिष्ठाववसारवकु। ताय

हाला। दवयातमुलितत्वाय

स्वेस्तिवाक्ययठयावदवस्म

नमावेकातकावा ॥

स्तिवहाला। यावच्चन्द्राकमर

तात्यादि ॥ ६०३ ॥ ॥

ततादवाचनकायता ॥

यठवासतवाया। मालेकाताल

लातक ॥ ६०३ ॥

अथादिमासतकृतायजमा

ननयूषरुजतयोचक ॥

तासिया। चेलुसिद्धनऊजम

काहानखल ॥

थययाभूतकमनसा(स)या

(न)तकमाचनकावैयता ॥

धूपदीयनेवश ॥ जाये। स्मा

ताविधिध्वंवाक्यतसह ॥

ध्वतयथाकर्म ॥

यतलिगाचतादिना। विदवा

५३३

वायकंथस्त्वपूर्व॥पूर्वषट्त्रस
 यकितनक॥यन्त्रिमसाइश
 उरुनंतलाका॥मध्वीन॥
 यल्लसिद्धनऊऊमकात्वात
 त॥चंद्रमाटत॥यूजन॥
 जंजल्लममनध्वनायायापू॥
 विधुध्व॥॥जंजमनक
 ध्वनायायापू॥विधुध्व॥
 जंजमनकीनध्वनायायापू॥
 विधुध्व॥॥जंजमनगंधाद
 कध्वनायायापू॥विधुध्व॥
 ॥॥जंजमनवीनध्वनाया
 यापू॥विधुध्व॥॥ध्वनय
 चध्वनायापू॥॥॥
 मांसाकृतिआतलाकातथय॥
 २१०॥॥गिरसयचामृतला
 ना॥यंचनतस्त्रुसतयावध
 लसाखलाकस्त्रुसतयावध
 यल्ल॥यल्लसिद्धनऊऊमका

खानत॥ कादूकायातनयूथ
 आरुलु। खल सया सावा
 नगलयातय॥ मोसाइतिया
 तलामूलय॥ धल केति हा
 खल विहलठि अलिवाल
 ॥ ॥ पूजन॥ मूलखल
 आवाक मूडा॥ ॥ यजमा
 नन आययक॥ वाक॥ स
 हप्रल दवायाति कागस्य
 यिनित दूता। तिकोलीमास
 मकलु सहप्रकृततुयः
 सिद्धत मोसहामन कोडा
 अदधिसंयुत। यवकोवापु
 हासन सालितं पुसाधिक॥
 प्रीतयउ निखादेव स्वकृत्य
 धाववृथधृक॥ कागमोस
 बाल ध्वं चोनातिजययानू
 ता। कोना पुर्वे लवकृति द
 धिनापूष्टि पुजायत। आचा

आचि कागनिवमोसयाउ
 यदाहयामि॥ यजमानस्य
 आचार्यलवकाय॥ ॥

यंचधाना विसृजने अमुल
 मुजुनयतिस्फुलवकाय॥
 म पूवुअनयाविधानायां विघ्न
 नागरुलपदा॥ ॥ दकि (६)
 नकधनोदयाम्यायां बाधि
 नागरुलपदा॥ ॥ वधिम
 कीवपधिमधानायां आयुर्व
 द्विरुलपदा॥ ॥ उल्लेख॥ उ
 रुवसर्गधधानायां लकीचिदि
 रुलपदा॥ ॥ मध्व॥ मध्व
 वीनयानधानायां मध्वसंयि
 सधानवर्क। यंचधानोपसिद्धति
 यल्लकमसुसिद्धति॥ धर्मयचं
 धानाकाय॥ ॥ ॥
 धनं लिक्कागनिवजयलधम

मांसाहु निविह्यं ह ॥ विदवा

धर्मलवङ्कसहस्रानिनी

कण्ठपालं हृत्पुलां सर्वदेवा
सुगलगतयेतं मण्डलं विन्दुयु
कं। आर्ष्ययुक्तं च पूज्यं अलिव
लिसहितं यंच यानादियुक्तं
संभुष्टं सर्वदेवा अलिमतं
लदायातु ककुब्धनीलं ॥ ॥
वाक्कतं सह। मां सा कृतिपूज्यं
सुमहदं कृत्वा हा ॥ वृत्तिमा
सा कृतिपूज्यं ॥ ॥ ३ ॥
थनाय च धनान् न ककुत्तुलित
मूनं मूलयावलिं सहायकं
लाकाः ॥ ॥ ॥ धनं वलि
सहायकं लाकाटः ॥ ॥
यंच धनानां कपूथ ॥ ॥
तना कालखण्डं पूज्यं यादावा
ह्यंधूचि कर्पून् मलच आ
तीरुल जास्वीन् नमदलेय
यादाव आर्ष्यकैली सचाद
यतकनकावा ॥ ॥ धर्म
नलया ॥ मल ॥ उजाजी कृत्वा

कन्दमहारे नवाय स्वाहा ॥
धनं ३ आ कृति ॥ ॥
कालखण्डं याद स मय स
र्ववीर्यादयं। प्रीतयता ॥
वाक्कतं सह ॥ ॥
थनाय मयया २ कलाया
दि लिङ्गं सा स्वाच इन्द्राया
लं कवाय हचन खचन
जलचलादि नानावदार्थक
नत ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नवेग्रहयार्त आ कृति विथ ॥
आदित्य ॥ खानवा ॥ उजाजी
कृत्वा स्वाहा ॥ धनं ३ ॥
सायानक वलु महान् जं नक
यद्यसूक्ष्मनिच सफास्व नथ
मावृष्टं ग्रहनाजं नमास्य हं ॥
शामसं ॥ शायु मल ॥ उजाजी
पूजा माय स्वाहा ३ ॥ अमृतं
सुमहान् जं पूज्यं ककवाध

न॥ हंसासुखं हितं दवं नमामि
सुतनन्दन॥

ॐ श्री न॥ यलका॥ ॐ काजीकु
ॐ श्री गायत्राहा॥ सुकन्द वृषधन
दवं॥ गकिह सुकुतासुन॥ ला
हिताममहातंज॥ सुसुतं प्रत
माम्यहं॥

वृद्धसु॥ ॐ श्रीका॥ ॐ वावीवू
वृद्धाय स्वाहा ३॥ यन्मासन
हितं दवं॥ सीम्यपूषसु॥ गारि
तं॥ नानायलमधिदवं॥ वृद्ध
वृषनमाम्यहं॥

वृद्धस्यतिरु॥ ॐ श्रीका॥ ॐ काजी
कुवृद्धस्यत स्वाहा ३॥ वाचस्य
तिमहादीफिपीताम्वनवित्त
वितं॥ सुकादीतां सुनूत्वं च
तस्मै वा सुनवतमः॥

ॐ कसु॥ कपुगुलि॥ ॐ श्रीदी
दुगुकाय स्वाहा ३॥ सुकंद

सुगुनंद वपुह वृषमहाकवि
सुकाधिदवं॥ जसु॥ नमामि
सुतनन्दन॥

ॐ श्रीवसु॥ मास॥ ॐ श्रीगु
नतिश्रवाय स्वाहा ३॥ दिवाक
वसुतपीमान॥ कायाददयन
न्दन॥ नीलजेन च यादीफिज
सुतोमिलनेश्वरं॥

वाङ्॥ स्वात॥ ॐ श्रीगुनाह
व स्वाहा ३॥ कालादीयं मेहका
टं॥ सिंहकांतनू सहुवं॥ जूडा
इन्दुप्रेमभुर्हं॥ नमामि वाङ्
दवती॥

कडा॥ कालाट॥ ॐ श्रीदीकु
कटव स्वाहा ३॥ अडमिभुज
गकाव॥ स्वप्नहसु विविषकं॥
यमित॥ गपसं हतं॥ नमामि
कडुदवती॥

जसु॥ अकता॥ ॐ श्रीदी

कृज नमस्वाहा ३॥ स्वतस्व
 तास्ववध्वर (स्वतस्वतस्वतस्व
 ती॥ उमयासहितादवकुत्त
 दवतमास्यहं ॥ ॥

वक्रालीसं॥ पूवा॥ उजां
 काल्वेस्वाहा३॥ निरधिप
 लास॥ क्षण॥ वक्रालीवेन
 वाहनं दुर्वदनीहं संहिता
 सुन्दरि साकास्तेषु कमल
 लुधुतकवी कल्याणकारक
 वा॥ सुवर्णदयि येष कादयि
 यमायीता सदा सर्वदा तान्द
 वां सततं नमामि निरसं सैसा
 नमानप्रदा॥

मोहं न्वीक्षुं ॥ गाय ॥ ॐ
कमोहं न्वर्थं स्वाहा ३ ॥ स
ध अक्ष ॥ ॥ नूडावी नू नू वक

वञ्जितनिवा वत्सा कला रुषि
नी हृत्कावी कृतली यत्तहि व
लया पुत्रा म्बुजमयी । मूलं
श्रुक्क वागलो पुनथितं देवी
यत्रामालती ता न्दवी सुतर्तन
मामिनि वसा वागमहि सुताय
हा ॥

कोमानीस्त ॥ लूपू ॥ समिधखण
 ल ॥ ॐ द्यौ च कोमार्थे स्वाहा ३
 ॥ स्तौ ॥ कोमानी सि विवाहने
 कृगलतागकिधृतासूदवी
 सादवी सतसी वृक्षासूवगला
 संपूजिता सर्वदा सावैसावधु
 वल्लितं युतानि (कोमोलाग्यसि
 द्विकनी तादवी सततं नमामि
 निवसादा विदुः ३४ स्वायहा ॥

वेङ्कवीरु ॥ मृग ॥ समिधवर्ल
गतसि ॥ उड्डाट वेङ्कवीरु
ला ३ ॥ ॥ गंखकं कमनूत

यंकजतलजुत्यागदादेत्यहा
अंवाकमकुजमनतनिकन
विम्वसदालाकया। तासाने
वदुमद्यवर्तुनिलयावि
स्वनीवैश्वी ताद्वीसतर्तन
मामिनिनशाविम्वसदाः
विनी॥

वावाहीरुं॥ शिसि॥ दूस्वन
उंजातवावाअस्वाहा ३॥
वावाहीवनूतलयागतेव
तीपाटनरुमीधता ३॥
घाटविघाटघाटघटनध
लानवाद्यधनी॥ संगुमंलि
दलस्वनस्यमरुयतंदवस्य
पीठानूजा ताद्वीसतर्तन
मामिनिनशावांकाथसिद्धि
कनी॥

ॐत्यागीरुं॥ पठमाहा॥ स
मिध ॥ उंजायनेत्याली
स्वाहा ३॥ नेत्यागीरुंरिलो

सिनीप्रचलितालक्ष्मीप्रजाप्र
कलायडंरुपुमंखलंधन
वतीमंजुप्रहामालगी॥ उं
यीठिविमुददक्तनिकनसंदी
पितासर्वदा ताद्वीसतर्तन
मामिनिनशांकालिस्तु
यहा॥

यामुल्लुहं॥ उति॥ समिधु
सि॥ उंजाययामुल्लुहस्वाहा
३॥ यामुल्लुहवलचलुमूद
तनीसालीवलीशासनीसाई
लाचितरुक्मचर्मरुलकैग
किंचमूर्तुधतं॥ यागीमीमल
रिन्दियालधतूरुवकुशाक
लक्ष्मीवली ताद्वीसतर्तन
मामिनिनशाहीतार्थरुयता
मिनी॥

महालक्ष्मीरुं॥ का॥ समिधक
ग॥ उंजायमहालक्ष्मीस्वाहा

३॥ यागनीकुवनन्धनी सुन
वनी संग्रहसिद्धिकनी युक्त
आमलिदस्य कित्तनतनं स
पूजितसर्वदा। जातीचयक
कालिकावनकृतपूनागता
गच्छय तात्तदीसुततनमा
मिलिनसालकीपुतायाका
ला॥ ॐ त्रिवक्त्राद्यादि ॥

वीहियलका॥ ॐ जगदीश्वर
कथयस्वाहा३॥ ॐ
स्वाहा॥ गगनाका ॐ
गत्यादि॥ ॐ तिन वमारु
का॥

अस्वत्कामादि अक्षविर्जी
वीयात आरुतिविधय ॥ ३
पूवा॥ ॐ अस्वत्कामाय स्वा
हा३॥ स्वाहा॥ वक्त्रजातिनम
स्तुत्यं डाक्षाय स्वाहा॥

वद्वं दाम् संयुक्तं अस्वत्कामा
यवतमः॥
मिउका॥ ॐ वलिनाजाय स्वा
हा३॥ ॐ मिचन संयाफिरु
मिदातनमस्तुती। गेकदवरु
विद्यक्ति नमामि वलिवं तम
॥

अकृता॥ ॐ व्यासाय स्वाहा३॥
सर्वगामार्थज्ञातया तपका
यपतिष्ठितं। प्रवका मिउसा
स्तुत्यं नमस्तुत्यासदवता ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
कठगुलि॥ ॐ हनूमताय स्वा
हा३॥ नकवर्षमहावीरवायू
पूजितावन। कल्पमूलरुत
प्रातिह नूमानाय वतमः॥ ॥

स्वाहा॥ ॐ विलीयताय स्वाहा
३॥ ॐ लक्ष्मजातिनमस्तुत्यं ल
कायास्तनवकुम। नाकसाधिय

तिन्व व न म स क मु वि ली व द ४ ।

ॐ क य वा य य स्वा हा

३ ॥ ग अ वि वि न्त म म् ल य र न

दा ज क ल र व ४ । क य न व क

मा उ र य धी न र व द वि क म ३

मू ग ॥ ॐ य न म् न य स्वा हा

३ ॥ कालिका वी न न म् य त्ति य

धु र ह स म् महा व ल ४ । नि क ति न

क वि न् स वा य न म् न य व न

म ४ ॥

य म् ॥ ॐ मार क लु या य स्वा

हा ३ ॥ व ट व क स मा नू र क्क

म क य वा स म् ॥ ग अ वि वि न्त

म म् ल य मार क लु या य व न म ३

॥ ॐ ति अ र चि र् न ज वि ॥ ॥

ॐ द्वा दि द ग ल क य ल स अ

रु ति वि स्य ह ॥ ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

क व नि षी हि ॥ ॐ कालं ॐ

दा य स्वा हा ३ ॥ सा य ॥

नु न व र ग ज नू र स हा य

कि स न म् य व यी त व लु म हा

त र्ज व द य प ति न मा नू र ॥

अग्नि र् स ॥ स कि ॥ ॐ कालं ॐ

ए न स्वा हा ३ ॥ सा य ॥ अग्नि

अ र्ज स नार्थ य म हा त र्ज

स म् र व ४ । काला मा ला वि

रु य य न कि र् स न मा म्

ह ॥

य म र् स ॥ ॐ ति ॥ ॐ कालं ॐ

य स्वा हा ॥ सा य ॥ म हि व र् स

क ता त्ता य द लु र् स र् य क

नी काल पा न ध न र् स ॥ य

द कि र् दि ग्य ति ४ ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

ॐ द स ॥

नेम ह्य अमिह स्नाय धारय
कक तातन नै न क नै व समा
दूरं नीला यल दल परं ॥

वमूल सं ॥ ह्य ॐ ॐ जा व व
नूला य स्वा हा ३ ॥ सं ॥ वा व नू
लं च क ह स्नाय सह प्रम लि
ह वि तं नाग या ग ध वं ह सं
न म सं ग म ति दा य कं ॥ ॥

वायु व सं ॥ हा म ॐ ॐ जा यु वा
यू वा य स्वा हा ॥ सं ॥ वा यु व
ध ज ह स्नाय यु व स व र्च वा
य कं प्राल ह तं च र ता ना ह
नि ल सं न मा म ह ॥ ॥

कू व न सं ॥ मा स ॐ ॐ जा सू क
वं ना य स्वा हा ३ ॥ कू व नं म स्व
मा सी तं स्व व ग म हा ह नं ॥
ह व र्च न कू लं ह सं प्र ल म म

कू वा य ति ॥ ॥
ॐ ॐ ग ल सं ॥ स्वा न वा ॐ ॐ
हू ॐ ॐ ग ल य स्वा हा ३ ॥
व ध सं ग क वं ग नं स व र्च
त स दा नि वं काल स वं म
हू वा य मूल या नि न मा म
ह ॥ ॥

अध सं ॥ हा म ल ॐ ॐ जा अ
अ न ता य स्वा हा ३ ॥ सं ॥
अ न तं य पु नी का कं र नि ता
दि स ग ज सं वि यु द्वा म प्र ता
का गं कू म्मा दूरं प्र पू ज य त् ॥

उ ई सं ॥ हा म ल ॐ ॐ जा ॐ
व कू ल स्वा हा ॥ सं ॥ वा पी न
पी नं व रु वं र्च व कू लं व रु
ना त नं हं स जा न प्र ता का स
दं ॐ क नू क म ल ॥ ॥
ध त सं थ व २ म ल व आ क
ति वि य धा न ३ ॥ ॐ ति ला



कपाल॥

यजमानस्य आकृति॥ ७५ ॥

४ यजमानस्य आयुर्विद्वत्

स्वाहा ३॥

आवायस्य आकृतिविधिमल

७५ काकाद्वा आवायस्य मलः

सिद्धिदह स्वाहा॥ धन ७४ ॥

७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२

दत्तपाटनविधितिलाकृति॥

हृद्यस्य॥ यजुर्वेदस्य॥ वायुकि

चतुर्ता॥ चतुर्थी॥ षड्

किनी॥ चतुर्थी॥ वक्रला॥

गुज्ज्वरी॥ गुवाहा॥ जङ्ग

वृगा॥ वल्लभा॥ चानिदव॥ वि

क्रान्ति॥ शीतल॥ ग्यन्धरी॥ क्रा

मयि॥ जातिमल॥ नन्दिमान

रुगवति॥ लवण॥ राजदण्ड

लि॥ लवण॥ गन्ध॥ मति

लि॥ कमलातीर्थ आदिन न

वयी० अक्षमालका मध्यापी
० त्वं॥ लीमसन॥ नृस्यन्वना
धानेगलगा॥ वक्र॥ विमूल
यं चायदा॥ गलगादिमाल
का॥ ॥ इवनयातं थव
मकुतमालका॥ तिलाकृति
विथ॥ ॥०॥

गामिक विथमकु॥ उरुउ
वउरु रुटगामिकनकुखाः
हा॥ १०८॥

होमयागसचाठ सिनथिक्क
पूकायाव धलस चायालधू
काव इयमकु॥ उकाकीरु
स्वकुदमहा॥ नवाययूधि
नकुखाहा॥ धाव१०८॥ ॥

जवधान्यादिदृय॥ यक्कास्वा
नया॥ ताय॥ समिध॥ गुठाद
न॥ दग्धादन॥ वदलीरुल
याल॥ जयलयमकु॥ स्वस्ये

वातमकुधाव॥ ७४॥ ॥
स्वकुयामकुहा॥ ७४॥ ॥
आकासकुल॥ १०८॥ ॥
विथंयु॥ सुमुख॥ गतयूया
स्वततिल॥ ककुतिल॥ न
कतिल॥ ठिकदू॥ मलव
यिथी॥ सु०॥ ॥ विरुला

हल॥ यरुल॥ अरुव॥ ॥
वृषकगव॥ यमकगव॥ व
दनगुलिगाठ॥ १०८॥ अगु

ल॥ गुगु॥ श्रीखु॥ कर्षुन॥
कमुनी॥ सधाविधी॥ कदासू
ल॥ जस्वीरुल॥ यका॥ १०८॥
अकतलाठ१०८॥ दारुलहा

१०८॥ इइ॥ धतअर्घयातस
ग॥ स्वकुदया मकुल॥ अक्षा
रुव॥ रुदयात॥ १०८॥ ॥
तमादगवलिविथ॥ विदव
याग्नि॥ वक्रायादि॥ अग्निता
मादि॥ रुडकादि॥ अऊनाः

दि॥ वदुषष्टि॥ महावलि॥ ॥
 आरुतिविषय॥ कण्ठ्यामकुल
 कण्ठ्यामुत्तिष्ठयावधियक

॥ अतः संकल्प ॥

दिग्विजय ॥ ॥ ॥

घटाक्षतिविधा॥ सक्तदया
मूलमल्लंशशूराक्षरंशक्या
त॥१०८॥

चेतदीपवहिका ॥ जूझारु
नंशक्या १०८ ॥ गयलिनड
थ ॥ ॥ घृता इतिवि

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ १० ॥

वृक्षा रुति॥ चतुर्वानरुतलप

॥ॐ नूड ह्य ४ स्वाहा॥ॐ नार्क

सत्यं ब्रह्मा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हो॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

४ स्वाहा ॐ सर्वस्याह गत्य ४

॥ द्वाह ॥ ॥ द्वादशकिं ॥

दसबलि विमर्शने ॥
अष्टमस्तुतयविष्णुकभाचन

युष्मद्वाक्यार्थश्रुतिवि
थैमद्रु ॥ ॐ ज्ञानज्ञानसुख

१०८ ॥ ॥ स्वस्वदेवीमस्तुत

॥ १०८ ॥

ध्रुवाक्षयं लुप्तं सिद्धं स्वान्तं ध
लं मृद्वान्तं ॥

यजमानतु त्वं वक्ता त्वं

आचार्यस्यैवाङ्गन॥ स्वस्व

देवीयास्तोत्राष्टकं वाचस्पत्ये

त॥ वक्षारवदाभिकलकयि

लेमूनि यूता मंलुं लंयं न्मथानि

कलाशस्त्रमाहर्षिनिबन्ध

सकलाष्टावर्त्तानकयक्

पूछुनिका। चमहै। महियष्टन

मादो य पात्ता यो या उ दं वा

यदुमूनिस्त्वया रंयवा काल

काथागमसूतीथगलपुवद
कासुधिलेमारुकावा सिद्धि
प्रथोददोउरुवउवसूमेगी
युक्तयुक्तुगुगुगु॥
उतमोभूते॥

व नजाखीकालिविधुवकल
खरुवयावनेरुउख सतवी
यविधयायमूनिजेनेमि
तलास्करंगकिहस यमा
धायतेमासाकनमेपिनिकल
मूक्तमूक्तानिमूक्त वन्दवः
कुशिकुडिजतिविबुधुवृष्टा
विकर्णरुवत्त॥ ॥नकापुको
चक्रकाप्रियथयथगतापीति
दवीलिमायातत्वापीनीयका
नात्वमसिचयवमाप्रितिका
लपुवंगमातावदाससंगति
उवतउवताप्रियकानासम
सादवीसंक्षास्वरूपाजयति
वज्रगतांनित्यरूपागिवासा

॥ ॥ उडवकापुखलुसि
ततलगगतहातकालेदवी
जंवावृक्षावक्रिवाजंभवतस
हयूतंसोच्चमूकाचवृष्टि संव
कंधनधारासमस्तमयतनूदि
यहीनंभवत्तं कुर्याहकुर्या
येददुववसूखेससदावज
लक्ष्मी॥ ॥ प्रकाशं वक्रिन
तं वसयन्मविधासेनमकुत
मकु सवतिस्वल्पमकु मगुव
सूत्रयेदंतिवृद्धिसूत्रासांथा
वधाधानमकुमवगुरुयहवधा
नयायंप्रध्वस्त सायंप्रीदवध
याजयतुवनसदाचुकिदा
मूकिदाच॥ ॥
यकत्याखचवत्तं वसनिधियु
टिकायातुकारुचवत्तं याता
लंदिद्यसिद्धिप्रिउवनसहितं
दिद्यचित्तामलिध्व सिद्धिद
यावधीतांयनपूर्वयसतंग

नृदं मरुवायं एतदं (ग) प्रसा
 दात्सुखवतिरुवतामग्निदेवा
 प्रसन्ता ॥ ॥ बुद्धाविष्णु
 शुभकाक्षत्रतियमकन० नके
 यासीसमीन० श्रीजकस्यानक्त
 इर्नगृहगलसहितं संयुक्तं
 देनाग० ॥ हनन्वासिद्धिवाग्ना
 इतिरुयहर्नचतुष्टयादि
 देवा० आगित्यासर्वदेवाः सून
 गलनमिता० यातुवासर्वदे
 वा० ॥ ॥ आवह्नास्त्रन
 स्यप्रचवितरुवन्त्यावदाका
 सगङ्गायावह्ना (ग) नगमया
 मगनगलयति० (ग) यतिर्वा
 ग (ल) ग० ॥ आवह्नास्त्रविष्णु
 सूनयतिरहिततिष्ठतमन्त्र
 मृ (ह) तावत्पुण्ययोगसग
 लयनिवृत्तं दानपूजाविधी
 नी ॥ ॥ सफाचानसूसाक
 वरुनयनवह्दयादिपूजु

तथा तानाकामरुलादयं क
 तयुतं संपूर्णकामपदं वलु
 वलुगिरातिमंप्रकटितं सि
 द्धान्तमन्त्राचिन्तं दिव्यादाक
 तिदाहृतिषु रगवानसातद
 नृपंतिव ॥ ॥ अजं यत्तु
 संधादिगविदिगसमासं कि
 तादवताया क (लु) वावक्तिम
 (ध) सकलयनिर्जुतं मलुलं सुः
 लिलेवा ॥ तसर्वं सुरुदवाभूति
 मतरुलदामरुसमाधिसूजा
 मूद्रापूजाविधानायजनय
 निवृत्तं कौलदाधाकयतु ॥
 ॥ ॥ स (व) दायस्यपादा
 यश्वनयनयद० सामवदाथ
 हस्तो एषा० इथवादिनीयं गत
 पथवदन्त्यादतिर्विष्णुधाव
 ॥ गमयणीयस्यगमयं नयनम
 यतिषट्पुष्प (ग) वदं बुद्धा
 विष्णु० प्रकृत्यमूलिरुवतु

वसुमतीयस्तु वृषीवमाहः॥

॥ सुप्रोता सर्वदेवाह
विष्कल युतामग्निमूर्खाति
रुक्का कृत्वा पूजुं सुरार्थसक
लपुंरयाभातिकं पूष्टियस्मा
सक्तो वा तस्य सर्वं अतिमत
रुलया सर्वसिद्धिददाति ता
न्दवीनामिरुक्का सकलसर्व
गता अस्तु वृषीनमास्तु॥

अस्तु मन्त्रार्थमस्तु कलगा
स्तुलिलदिग्यवसुप्रोताव
नदारुवस्तु॥ अजमानस्य
पीडस्वद्वद्वतायाः॥ एवं
वाग्निस्तु निमित्ताथेन
स्वस्तानकं यथालाय वसु
मादि अग्नितान्नादिमहा
रुववसहिताय प्रयागादि
अयादि अगिनीसहिता
य गता वस्तु कं यथाला

य हस्तुकाय सामायाय स
मलेयविवावाय दिगविदि
ग ०० द्रादिलाकपालाय
सुप्रोताववदोरुवस्तु॥
पीडस्वद्वताय अस्तु रुद्रा
कायमूर्कसा यथाभाक्का
गुरु रुलववदायिभारुव
स्तु॥ गुरुमस्तु सर्वजग
तरुवस्तु रुतकदायाविपुल
योक्ति भाक्ति सर्वरु सर्वज
नाः सुखितारुवस्तु॥ गवा
क्तलोयः॥ गुरु रुवस्तु॥ कर्मा
चार्यस्य मस्तु सिद्धिस्तु॥
गजाधर्मविजयास्तु॥ यजाः
सुखितारुवस्तु॥ सर्वसत्ता
सुखी रुवस्तु॥ यथैव कोल
वर्षाय गुरु रुवस्तु॥ दियद
अद्वयदानां भाक्ति रुवस्तु॥
पूष्टिरुवस्तु॥
दवावर्षु कालजनयति

वसुधा नस्य संपूर्णमद्या कीना
आसक्तु गवा नय विपुलमति
४ यातु ना जाध निशा ॥ सो यत्ता
साधू पूजा कल युवति जना जा
ति दोषा विना लोका तां रुकि
रा वा प्रवति विपुल रुकि न
घातु रातु ॥ ॥ ॥

असदा द्वाधियति २ प्रीति जय
असक साह द वसु रव म सिद्धि
ननु ॥ ॥ यजमानस्य यज

माती ना अचल सिद्ध न सत्ता न
वृद्धि ननु ॥ ॥ यजमानस्य स

गदा यनि वा ना ना आयु ना ना ग्य
मेव यज न धन लक्ष्मी सत्ता ति
सत्ता न वृद्धि ननु ॥ ॥

सक्त ४ सक्तु निवक्तु न सक्तु ना वि
धक्तु पापा दया ना जान २ यति
या लय क्रि वसु धा धर्म दिता
सर्वदा ॥ काल सक्तु ति वधि ना
जल सूच ४ सक्तु यजमा दिता ॥

मादती धन वृद्धि वा सव सक्तु जा
क्षीय मादा सदा ॥ ॥

स्वस्ति यजाना यति पालय लं
न्याय न मा र्जन न मही मही गः

॥ गवा द्वा लय ४ पु र म सु ति
त्यं ला काः समस्त ४ सु खि ना रु
वक्तु ॥ ॥ काल वर्य वृथ य

न्यः वृथी वी नस्य लालिनी ॥ द
लाय का रुव हिता द्वा क्त ल ४
सक्तु ति रुया ॥ अज्ञा ना ७ क्तान

ता वा क्त न म क्त न क्त न य क्त न
चा त्रि ति क्त म द्वा पूजा विधानं
क्रम यज न वि (धो) सो य मा र्जन

न मा र्जन ॥ ॥ यक्तु या क्तु पू
दा वा रु विन यि न क्तु ति स व
ला क्त क्त ना थ सर्व संपूर्ण मेव

कल न क्त न व रु प्रा र्जु लि ४ सु
प्र सन्न ४ ॥ ॥ दा धन ना क्तु

न य रु कि रा वा वा य ल्य दा वा
नून य प्र रा वा ॥ नूना धि क्त मः

लुक्रियाधनं ॥ १ ॥ कमस्वदाया
 ममदाय हन्ता ॥
 लंगति ॥ सर्वरुतानां संहित
 येयमाचन ॥ अन्तर्धानं लु
 तानां दृष्ट्वा त्वयमममनी ॥ कर्म
 लमनसावाचा तमात्यायादि
 कर्मति ॥ अष्टतं वाक्कीर्तनं वा
 तपयुनं दृष्ट्वा सती ॥ मन्त्रहीनः
 क्रियाहीनं रुक्मिहीनं त्वयि व
 च ॥ अथ हामा र्त्तना हीनं कर्म
 तां यनमन्त्रवि ॥
 वाक्कीर्तनं सह ॥ अन्तर्धानादि ॥
 प्रकाशक ॥ अन्तर्धानं ॥
 आत्म आनीवादि ॥ अन्तर्धान
 प्रकाश प्रलित विप्रर्जन ॥
 अथ वदिया कर्माग्रिकीकाया
 वरुन ॥ प्रनितया लंखन
 हाय ॥ प्रकाशं वायुवाजं ह्यादि
 ॥ अथ वदिया कर्माग्रिकीकाया
 य ॥ अन्तर्धानं सयतं व्याधिवा

लुवालासकामदं ॥ खड्गं न अर्थ
 लालाय अयामा ॥ नर्वदं पूषकं
 ॥ समीपमयतं यार्थं मोहाक
 मधूयुचन ॥ अस्वहं लेखका
 मं इवा आयुधवदन्ति ॥ कर्मा
 धेयिर्न जीव प्रत्यायु कामतार्थ
 कं ॥ ॥ वलि विप्रर्जन ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अग्निं स अर्जुन काय ॥
 यत्न विप्रर्जन ॥ गच्छ गच्छ विः
 यं ॥ अथ स साववाहन ॥
 यत्न वृक्षादयो दवा तपुगच्छ
 ता सती ॥
 गता ॥ अथ हामकावयता ॥
 उजा कपिला ॥ अथ खोहा ॥
 जापि नलागय स्वाहा ॥ उजा
 अ० वागय स्वाहा ॥ उजा नूजा
 गय स्वाहा ॥ उजा मजागयः
 गय स्वाहा ॥ उजा धूमागय स्वा
 हा ॥ उजा निवागय स्वाहा ॥

ॐ कारे नाम ज स्वाहा ॥ ॐ कारे
नाम ज स्वाहा ॥ ॐ कारे नाम ज
नाम ज स्वाहा ॥ धृतं दमनि ॥

दमनि द व द वी वि स ऊ त ॥ ॥

वृक्ष का वृक्ष दू या त ॥ म त्र ॥

ॐ कारे स्व क तं आ क तं स्वाहा ॥

ॐ कारे इ क तं आ क तं स्वाहा ॥

तामूलं द या त ॥ ॥ अग्नि आ

दि त वि स ऊ तं ने या थ ॥ ॥

त्या स लि का थ ॥ ॐ कारे जी क रे

न वा नि स्व स्तान वा सा र व रु ॥

त मा र्ग हा न मू द या ॥ अ म तं अ

ग्नि क लु हि तं य व म ध्व नी सा न

स्व द द थ ल यै क या ति ॥ वे न्द व

ऊ ० मा ए नो नि व न थ मे ॥ ॥

व कि लं स र्व द वा ता मी र्व ल म

सि या व नी स्व स्तान ल या र

स्वा ग क र्व जा ० न यून ४ ॥ ॥

जी का न र्व र म धा व न या थ ॥

हा म या र्व र म धा व न या थ ॥

ऊ य मा ला वा क्का द न उप ति

हा म या र्व र म धा व न म स्तो

न या थ ॥ ॥ य था वा न त्या दि

व लि (थ य म ऊ ति थ) ॥ ॥

य ऊ मा न स्व कि का स तं स त ॥

उ वा स क र्व न त ॥ ॥ नि र्व

क त ॥ र्व त व लि ॥ दी य वा ह न का

क ल न रि व क ॥ व रु ॥ सि धा ॥

य र्व ल का स (ग न) स्वा न य च

सू य को ॥ य ऊ मा न आ दि त स

क ल दि थ ॥ ॥ आ व ति ॥

क र्व न क न ॥ प्र ति ष्ठा ॥ ॥

सा कि थ थ ॥ ॥

क र्व ल व क्का थ ॥ ॥ क स उ ढा

व की मा नी रु जा वि थ ॥ ॥ क र्व

या ती थ का या उ च उ र्व त य र्व

याथा॥ समययाथा॥ वाचनदकि
ता॥ प्रकानका॥ अन्वपूर्व॥ आनी
व्या॥ कोमावी विसर्जन॥
अथया॥ अतः कसनसायावधु
या॥ साकिथय॥ वीवलास॥
कलकीपूजा॥ धनधुक्कयावि
धि॥ ॥ ॥
यद्गुकोद्गुदवसकपूजावनमा
ला॥ यासाकदयकाव॥ वृत्तिप्र
रुवग्नियरुविधिसमाक॥ ॥
सम्बत२२५ माघशुद्धि२ कर्म
चार्यधर्मनायायलनलिखितं
गुरुमन्त्रपूजयोगदीर्घायूनम्॥

गिनहासयावसयविधाना॥
ताय यतवासधुति चिता॥
ऊऊसका॥ दहिरे॥
कर्तुयता॥
यंचयता॥
अइवानयाता॥ ध्यासगुगुलि
यंचवंगीयातकाटज॥
यंचवालपाय वंकसय॥
यंकसहाक खंजम्ब॥ थून॥
मोकसताय॥
यंकसहाक॥
मध्वोद॥
यंचसुपकागठ१ कोमावीसु
गम्बठ१ खदिक॥
थलिलडया१॥ माचय१॥
कलगताहायाग्व५१ माचय१॥
कसकत॥ सिंधुमड॥
यजमानयाहसककडिहायक
हामसिका३२॥
सिमतवा१ बालग्व५१॥

हासयगुमलायात १ ॥
 मूकलदयात १ लूकात १ ॥
 आकूयातकाट १ ॥
 पंचवत्तश आमसग्वउ १ ॥
 नैकसमदयात १ धायितिव १
 आकूकायलक ३ ॥
 घातवाप १ ॥ विहीवहतयावाही
 धलकूल १ ॥ हासकूल १ ॥
 लयकूल १ अकतकूल १ ॥
 साइइकूल १ साधलिकूल १ ॥
 पंचभालाग्वउ १ ॥
 पंचभालाधतयात वायू पाद
 चल चाकू माकू माकू धतपूर्व
 दगुयाहिययागु दकिगस ॥
 इग्धयधिस ॥ तमाकउरुव ॥
 वीनमध ॥ साखलकूल १ ॥
 वयलासमा अकू कीखयल
 वेवलंगत वाइमनया वउसि
 माकूनी धतवका धादिमा ॥ ॥

अयामार्ग हल यहल अरुव
 रुल यकाह प्रियंगु सुमुख
 हातपूष्य वृषकंठय यमकंठय
 कूलकंकम चणुगुलिव १०८
 नियाधूतिपू १०८ अगुल गु
 गुन गाल ॥ ॥
 आदित्यस्वातवाप १ साशय
 मय १ अंलकाय १ वृषयूकाय
 १ वृषयूकाय १ गुकयगुगमास
 नाम्नात कडुकोलाट ऊर्मअ
 कत ॥ धतनवग्रह ॥
 वृक्षली पूवा माताथ कोलपू
 वेमूग वासिसि उयलमासवा
 उति महा कंठा धतमारुका
 दियादाहल १०८ ॥
 दिया अकत १०८ ॥
 खंडयितायदा १०८ ॥

सप्तमनयातट ॥
 विकट विरुला गुकम्याल
 एला लवठ लववाय जित
 हाल सधुवि गुगकल मद
 नरुल यकाषधी सवाषधी
 धमअषधीगल ॥
 सूर्यकातिसतिसयादामत ॥
 मूल ॥ कस्याड ॥
 अकसि १ ॥ यलास १ ॥
 यलास २ ॥ षदिन २ ॥
 त्रिजिल ३ ॥ अष्वसु ३ ॥
 अयामान ४ ॥ वेकलन ४ ॥
 इम्वनि ५ ॥ वट ॥ ५ ॥
 वलंगत ६ ॥ सति ॥ ६ ॥
 सति कथ १ ॥ दवायावृण ॥
 गुठता ८ ॥ अयामान ८ ॥
 कल २ ॥ कतवीन २ ॥
 वकसि १० ॥ इम्वन १० ॥
 धतनवग्रहया ॥

स्वतार्क ११ ॥ धतसधविधा
 विल्व १२ ॥ विकट ॥
 आमान १३ ॥ विरुला ॥
 पिलाख १४ ॥ लवठ ॥
 अस्वक १५ ॥ एला ॥
 ककनू १६ ॥ कष्वन ॥
 सवद १७ ॥ गुगकल ॥
 नागकाष्ट १८ ॥ जितहाल ॥
 धतअस्वादग ॥ गुकम्याल ॥
 सतिधगल ॥ सधुवि ॥
 तिथि १ ॥ हाकजील ॥
 जटासांति २ ॥ गीखगु ॥
 व्याहा ३ ॥ लववाय ॥
 कूट ४ ॥ बाल ॥
 मानकूकमज ॥ यिमू ॥
 सिचिकिसि ५ ॥ धतरवाजया
 रुवडि १ ॥ वाधगल ॥ ॥
 सति ८ ॥
 वयस्वान २ ॥
 मूककगुलि १० ॥

श्रीखण्ड ॥

कर्मवृत्ति ॥

कर्मवृत्ति ॥

कर्मवृत्ति ॥

गालावन ॥

धर्मचतुष्टय ॥

नक्षत्रचतुष्टय ॥

गंगाजल ॥

सूत्रा ॥

जापूजावसथ ॥

उजावनम्य ४ ॥

म्यालनेवय ५२ ॥

द्वंद्ववलि ॥ ५३० ॥

घावयात ॥ ७ ॥

वलिघात ॥ ॥

आकाधलिजा ॥ ॥

आवनिचलयति ॥

दंगवलि ॥ ॥

गामास ॥

कर्मलुजा ॥

धर्मलुजा ॥

कर्मलुजा ॥

कर्मलुजा ॥

श १ ॥

विचर ॥

हंस १ ॥

इति २ ॥

चक्रमाष्टक ॥

वगामाधकृष्ट ॥

लयतमालके ॥

धर्मलुजावदवकृष्ट ॥

पनिगामाधमाल ॥

यक्षमण्यवाधेल ॥

कृष्णकाकृष्णलिरियाया ॥

सनामयाया ॥

मतपूजायाधमाल ॥

एकलकतिखादनचात ॥

सम्भ १९५१ सालमिति १९५१

शुक्ल १२ ऐश्वर्यकादिनजज्ञाश्म

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

गुरुवंशमोजीमृतप्राप्त

उनी २ वगला मुरवी देवी

नमः॥ ॥ त इ कै तला

तन॥ वक्रा मं संपव आमिस

अथ ययका न के साधका बा

हिता थयि म कृता य वे निगा

यला ॥ म न ल मा जे ल य व ता पि

य ना य त प्र ल वं मि न सा या च

त त तं वगला मुरवि ॥ त त तं स

र्व इ क्षा तां त त त्ता वा चं मूरवै प

दं ॥ म कृ थं ति त ता जि क्षा की

ल थं ति प द द थ ॥ वृ डि तां

य प धा इ मि न मा या ग मा लि

खं त ॥ लि खं तु पू त नां वा रं वा

त वि ग तं स त त ॥ द्वा वि णं द

क ना वि श्या प र्धं सै प त्र दा यि

नी ॥ ॥ अ ध्या दि त्या सः ॥

मि न सि ता न द स ठ अ न मः ॥

मूरवै वि षु द्धु त्प स त्त मः ॥ इ दि

वगला मूरवी देवता ये न मः ॥ ॥

लिङ्ग की वी जा य न मः ॥ पा द थ ॥

हो हा ग क थ न मः ॥ मूल न

ऊ थ वि ति आ गः ॥ ॥

त व क ना नं त्या स ॥ ॐ की जू

द्रा य रु ट ॥ ॐ की जू दु षो त्या

न मः ॥ वगला मूरवी त ऊ नी त्या

त्ता हा ॥ सर्व इ क्षा तां म ध्वा माः

त्यां वं य ट ॥ वा चं मूरवै स कृ थ

२ अ ता मि का त्यां दू ॥ जि क्षा

की ल य २ क ति के त्यां वो षट्

॥ वृ डि तां य २ की जू क व

त ल यु क्ता त्यां रु ट ॥ ॥ प्र वं द

द या दि षू ॥ ॥ ध्वा नी ॥ म ध्वाः

म ध्वा वि ॥ च क पू जा नं ॥ ॥

ऊ थ क्ता या दि की वि स कृ त्त

नं कृ त्या ॥ ॥

अ स्य पू न ध्व न ग व क ऊ थ ॥ ॥

धी ता न्य व ध ना कृ त्या पू र्व गः

हिमूखलितः॥ न कमकंजय
सर्गं हविडागं थिमालया॥
वृक्षवर्षनता नित्यं प्रयता
ध्यानतस्य नः॥ प्रियं गुणाय स
तापि पीतपूषोश्च रावयत॥
॥ अथ प्रथमः॥ कुरुते
वाकगतिरुक्तं इष्टातां वृद्धि
तालेन॥ जयहामेषमागत
सर्गं वाचमूर्तजयत॥ हविडा
हवितालायां लवलीकूया
निमि॥ सुकृतं यत्र सत्याति
तापकाया विद्यानला॥ अथ
वापीतपूषोश्च निमध्वकेच
हाममंता॥ सुकृतं वृक्षसर्व
मृपजागैः प्रत्ययावहः॥ उ
कावयाः॥ समूखयाः॥ नृद्धि
गिरसा लिखत॥ मध्वमंतास
साध्या तदा अं वा कवद्वयं

वीजलीकयवर्गुस्मृतायं
विदुहविनी॥ वृद्धं गं स्वरा
यतं स लिखत पृथिवीगतं
॥०॥ कावेल समावृष्टं वृद्धं
काव पृष्ठं वृद्धिः॥ तत्कोला
लखासंयुक्तं॥ नृलचका
सर्कं लिखत॥ निगूलम
नखायाः॥ पृथ्वीवीजानिया
ध्याः॥ अष्टसविचका
वृत्तद्विर्गलौ लिखत॥
प्रिथिदं तनिकं वाक्का माह
कायविमलुलं॥ अष्टकाय
ध्याः॥ तदा अहिनमायया
निर्द्धाकृतावीजं ननादसं
मिलितौ प्रिणा॥ निखे लुव
वृद्धावैष्टयथा॥ वृद्धगलौ मू
खी॥ पृष्ठं वाक्का पृष्ठं वा हेवि
डासर्गतालके॥ दिव्यसुक्तं

मुखस्तु लिखित्वा गच्छ मा क
त ॥ विवाद च कर्मा लिख्य रु
ये तेन व वस्तु लि ४ । कुरु कान
स्य च कस्य न मता विद्योतत
४ । मृत्तिकां समूपादाय वृष
संका न यं कृत ४ । यत्तु यद्वय
वित्तस्य तालकं न विलिख्य
च ॥ तन्नासा यो विविदि क्रि
या यो न कुरु निजं गृह ॥ अथ
यं कुरु च कालं तिस्रं योताय
यावत्तत ॥ इह स्य सुमुख्यस्य
व मुखं वोचस्य ते वली ॥
ॐ तिथी वगला मुखी य वि
कुद ४ ॥ गुरु मस्तु सर्वदा ॥

श्रीरुद्रगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीका
र्त्तवीर्याय नमः ॥ ॥ श्रीकार्तवी
र्यार्जुनमन्त्रस्य श्रीदत्तात्रेयस्य
स्वस्ति — — —

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ ततो जेनाहिले विधान लिख्यते ॥ ॥ त्रितत्वेनाचम्य ॥ संध्याया
ये ॥ प्रातःसंध्यायाये ॥ नुलजेनाकायावजपलये ॥ दुकारं त्पादिजवलाहृतनजोऽवतये
अनमोवाचस्पतये ॥ नारद उवाच ॥ भगवन्सर्वभर्मज्ञब्रह्मतत्त्वविद्याम्बर ॥ श्रोतुमिहं स्पृहं
देवनवतत्त्वतुलक्षणं ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ भृगुब्रह्मपरगुह्यं यवित्रं पापनाशनं ॥ अंकारं पु
थं स्रुत्रं द्वितीयमग्निदेवता ॥ तृतीयं नागदेवत्वं चतुर्थं सोमदेवता ॥ पंचमं प्रीतिदेव
त्वं षष्ठं वैवस्वजायति ॥ सप्तमं वाभुदेवत्वं अष्टमं सूर्यदेवता ॥ नवमं सवृदेवत्वं दशमे तेन
वस्रुत्रका ॥ नारद उवाच ॥ केन वा पार्थितास्रुत्रा केन वा त्रिगुणि परा ॥ महेश्वरकृतां गुणि

यत्री त्रिगुणी परा ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन त्रिविधं आर्यं तेजगत् ॥ अंकाराय नमः ॥ अं नागा दे
वताय नमः ॥ अं अग्निदेवताय नमः ॥ अं सोमदेवताय नमः ॥ अं प्रीतिदेवताय नमः ॥ अं
वस्रुत्रायेति देवताय नमः ॥ अं वाभुदेवताय नमः ॥ अं सूर्यदेवताय नमः ॥ अं सर्वदेवताय
नमः ॥ ५ ॥ संध्याया गायत्री १०८ ॥ सूर्यया गायत्री ३ ॥ विष्णुया गायत्री ३ ॥ अथ धीराया गा
यत्री ३ ॥ मृत्युजयया गायत्री ३ ॥ पश्चिमया गायत्री ३ ॥ अं ह्रीं सुं उग्रचरणाय विष्णवे हुं
गां देवी धीमही तन्नो वरिष्ठ प्रचोदयात् ॥ अं रक्ते सिद्धि लक्ष्मी विष्णवे नमो वैया यधीम
ही तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॥ अं रक्ते रक्ते कालरात्रि विष्णवे कालसं कर्षणी धीमही त

नो काली प्रचोदयात् ॥ ऐं लीं सौं त्रिपुरादेवि विघ्नहर्त्री कामेश्वरी धीमही तन्नो लीं ऐं प्रचोद
 यात् ॥ ऐं मित्री शनाथाय विघ्नहर्त्री कण्ठाय धीमही तन्नो कुम्भि प्रचोदयात् ॥ अं सहस्र
 भुजाय विघ्नहर्ता राडावाय धीमही तन्नो त्रिप्रचोदयात् ॥ अं निरंजनाय विघ्नहर्ता निरंका
 राय धीमही तन्नो मुन्यप्रचोदयात् ॥ त्रिधा ॥ थो तेजपलपे ॥ मूर्यना रायण अघोर मु
 त्तुजय शक्ति सहितं पादुकानवात्मा श्री कण्ठवा एही अघोर वज्रवती सिंहकार सकार
 कर्मयामूलस्थानया संवर्ते भवार्था उगचराया सिद्धिलक्ष्मीया काली पूर्व नवात्मा कुले
 भवरी मिरवार तदेव त्रिपुरावाला त्रिपुर निर्वाण ध्वतेजपलपे ॥ अद्य वराहकल्मेत्यादिमा

मनक्षत्रजज्ञोपवित्रं यरं मं पवित्रमित्यादि अस्मत् अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकनामधेय
 स्पष्टं जज्ञोपवित्रं धारयामि पुजानगुजो नाते लंकं कोषाये पुजानगुजो नातो यावच्चटफु
 डावतोलते मर्जतर्धे मध्यान्हसध्यायाये ध्वतेजो नाहिले विधिः ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अथमालासंस्कारः॥ ॥ रुद्राक्षैर्वायद्विजयेदिद्राक्षै
 स्फाटकैस्तथा॥ नान्यन्मध्यप्रयोक्तव्यं पुत्रजीवादि कंचयेत्॥ यद्यन्यस्तु प्रयुञ्जीत
 मालायां जयकर्मणि॥ कामना भेदे तु॥ पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रुनाशकरी मता॥
 कुशग्रंथिमयि माला सर्वपापप्रनाशिनी॥ पुत्रजीवफलैः भूत्वा कुरुते पुत्रसंपदः॥
 निर्मिता रुप्यमणिभिर्जपमालेऽसितप्रवालैः विहिता माला प्रेयस्ते तुष्करधनं॥
 वाराहीतत्रै॥ सुवर्णमणिभिर्मालां स्फाटकीशङ्खनिर्मिता॥ प्रवालैरेव वा कुर्व्यात्
 पुत्रजीवं विवर्जयेत्॥ पद्माक्षभैरुद्राक्षं भद्राक्षं विशेषतः॥ रुक्तचन्दनमाला तु

भोगमोक्षदा भवेत्॥ अथमालासंस्कारः॥ ॥ तस्य नित्यता माह्वयामले॥ अथ
 तिस्थापिता मालां मंत्रं जपतियो नरः॥ सर्वत्र निष्फलं विद्या कुद्रा भवति देवताः॥ का
 ह्यात्संभवसूत्रधर्मकामार्थसिद्धये॥ तच्च विप्रेन्द्रकन्याभिरुर्मितभ्यसुशोभनं
 ॥ यद्वा भुङ्क्तं तथारक्तपट्टसूत्रमथापि वा॥ शा निवभ्याभियालेषु मोक्षौ जयेषु
 च॥ शुक्लरक्ततथापीतकृष्णवर्णेषु चक्रमात्॥ सर्वेषां मेवर्णानां रक्तसर्वस्य द्विदं॥
 त्रिगुणत्रिगुणिकृत्यगुण्ये किं त्यशास्त्रनः॥ एकैकं मातृकावर्णसत्तारं पुनर्पेन्मु
 ॥ धी॥ मणिमादाय सुत्रेन गुण्ये तमध्यमध्यतः॥ ब्रह्मगन्धिस्त्रिधायेत्यं मेरुश्वगुं ठि

संयुतं ॥ गंठयित्वायुरोमालाततः संस्कारमारभेत् ॥ गौतमीये ॥ मुखं मुखे तु संयोज्य
 अष्टपुच्छं पुच्छेन योजयेत् ॥ क्षालयेत् पंचगव्येन सद्योजातेन सस्पर्शः ॥ ॥ प्रथमं गो
 मयलिप्रभूमौ ॥ स्नानादिनित्यकर्म कृत्वा उत्तराभिमुखं स्थित्वा आसनोपरि स्था-
 प्य ॥ त्रितत्त्वेनाचम्य ॥ अद्यादिमास नक्षत्रयथावाक्यं शुष्पमातृकामंत्रं त्रयवह्म
 भैरवत्रयविश्वयक्तागायत्री छन्दशीमहाकालीकामकलामातृका सरस्वती देव
 ताद्वावीजं स्वराशक्तिव्यक्तिकीलकं समरिलिभुद्वाथे विनीयोगः ॥ इति वक्ष्यां जलि
 ॥ फ्रैकुं खे म्मां रेवुं कुं फ्रैज प १ ॥ म्मां अत्र नमः ॥ मिर ॥ म्मां अत्र नमः ॥ वक्के ॥ म्मां इ नमः

दक्षिणानेत्रे ॥ म्मां ई नमः ॥ वामनेत्रे ॥ म्मां उ नमः ॥ दक्षश्रोत्रे ॥ म्मां तु नमः ॥ वामश्रोत्रे
 म्मां नमः ॥ दक्षनासां पृष्ठे ॥ म्मां अं नमः ॥ वामनासां पृष्ठे ॥ लं नमः ॥ दक्षगण्डे ॥ म्मां लु
 नमः ॥ वामगण्डे ॥ म्मां ए नमः ॥ उद्वेष्टे ॥ म्मां ऐ नमः ॥ अधरोष्ठे ॥ म्मां ओ नमः ॥ धोदन्तपक्को ॥ म्मां
 अं नमः ॥ मूर्द्धि ॥ म्मां अः नमः ॥ वक्के ॥ म्मां कं नमः ॥ दक्षबाहुमूले ॥ म्मां खं नमः ॥ कुपेरे
 म्मां गं नमः ॥ मणिबध्ने ॥ म्मां घं नमः ॥ अंगुलिमूले ॥ म्मां ङं नमः ॥ अंगुल्यग्रे ॥ एवं वाम
 हस्ते च वर्गं नमः ॥ म्मां टं नमः ॥ दक्षपादमूले ॥ म्मां ठं नमः ॥ जानुनि ॥ म्मां डं नमः ॥ गु
 ल्फे ॥ म्मां ढं नमः ॥ पादांगुलिमूले ॥ म्मां णं नमः ॥ पादांगुल्यग्रे ॥ एवं वामपादे त वर्गं

南

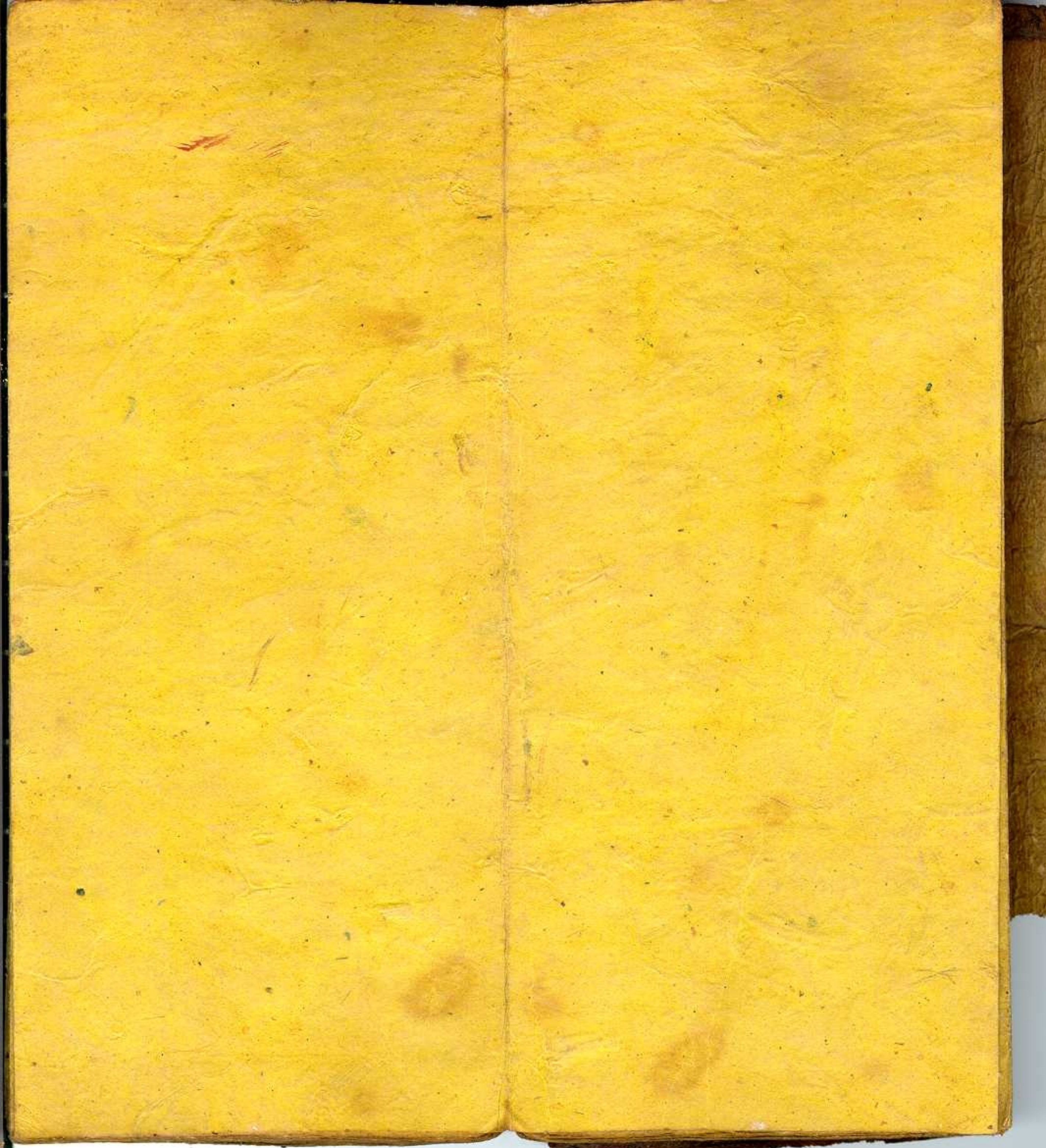
[illegible]

येष्वयादेवनेवलंगतच्चापापद्याकारयाडतयेदृषुसद्वपाततयेखतु ३
हृयापातकानमालाअच्छिडुनहेनेपंचगव्येनसेलेमंत्र॥हृफरुप्रष्णाल
यामिलंगवनसेलेहृत्सेएवंप्रकारेणअंमूलआइइंडुंअंमूललुंइंइं
ओंओंअंअं॥कं३५एवंहृलस्ययुक्तंआदौहृलस्यविद्यायातस्यैमूलवि
द्यायातदननरैगुंठयामिनमःगोडयुतिनिंभीक्रमेणहृडापालये॥अह
ब्रह्मगुंठिकुगोडकारेच्छिये॥पद्माकारवलंगतसतयावपंचगव्यनथा
तुषासेलेमंत्रं३सद्योजातंप्रवक्ष्यामिसद्योजातायैवैनमः॥भवेभवे

नास्ति भवै भवस्य मां भवभावयेत नमः ॥ पंचगव्यनपंचधा प्रक्षाल्य भिडलं रणं
 न संले ॥ मंत्रः ॐ तत्सु रुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ॥ श्री
 मन्नपचधा प्रक्षाल्य ॥ सप्तसुगन्ध ॥ कुंकुमगोलोचनकस्तुरकपुष्प रसील सुगुल
 श्रीखण्डयो ते चोला वघर्घनायाये मंत्रः ॐ नमो वामदेवाय नमो जेहाय नमो रु
 द्राय नमो कालाय करविकरणाय नमो वरप्रमथनाय नमो सर्वभूतदमघनाय
 नमो नमनाय नमः सप्तधा घर्घनायाये ॥ ॥ गुगुलिघृतसारलक्ष्मयेत् ॥ अष्टौ
 रमन्त्रेण ॥ ॐ अघोरैभ्यो घोरैभ्यो घोरैभ्यो सर्वत सर्व सर्व भो नमः स्वाहा

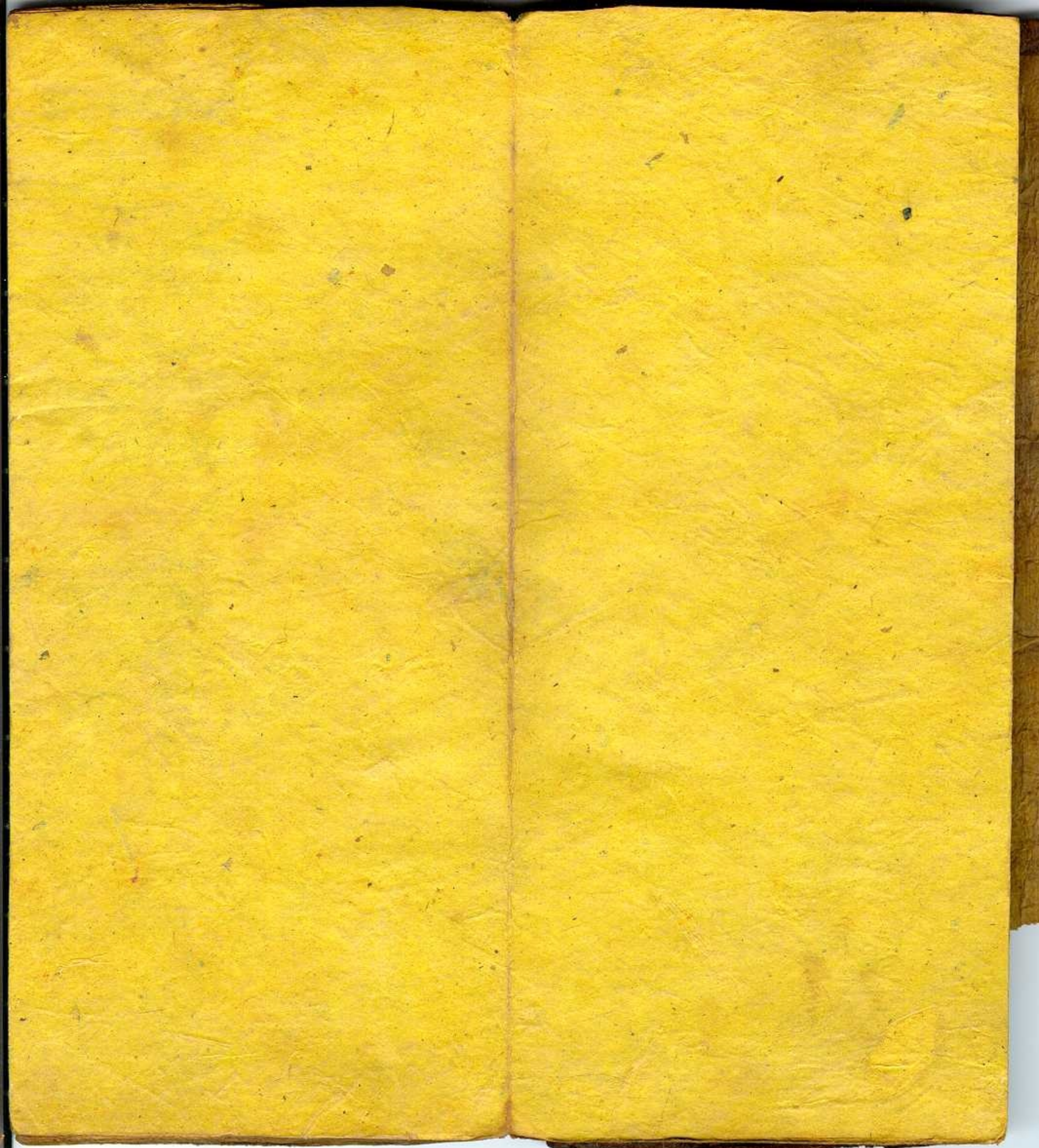
धूपसफये ॥ अक्षतपूष्याजलिग्वडप्रतियाये अष्टोत्तरपदलये मंत्रः ॥ ॐ ईशा
 नः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां वृद्धायती सर्वणे धियतिवृद्ध्या शिवो मे सु
 सदा शिवो ॥ अष्टोत्तरं पठेत् ॥ सुमेरुत्वं जुलं ॥ यो ते सामान्यमो धनम् ॥ अथ वदष्टद
 वता जुको न्यासादिभूतमुद्रिआत्मपूजा आसन ध्यान प्राणप्रतिष्ठा जीवं न्यासः ॥
 श्रीखण्डसिन्दुरदुर्वाक्षतपुष्पनित्पकर्मधूपदीपनैवेद्यजापस्तोत्रादिष्वमाहुतिवा
 क्यप्रीतप्रेतारकानेकत्र्यम्बपूर्वविसर्जनम् ॥ साक्षिधारये ॥ न्यासलिकाये मालाकोषा
 ये इति मालासो धनशक्तिविषयम् ॥ ७ ॥ लेखकधर्मनारायणपौत्रेण सुभू

























मीरा अर्धाग्र अर्धा
होतावाय

कीमतीष्ट्या

पंक्षपादि

कोष्ठां

कोष्ठां उद्वे

कोलेषां

विधर्म

कद्रथतुलि

कौतवलि
मालनेवद्य

(मज्जा)

गमग्राम

वृक्ष

उत्तिमया

वायव

वर्ष
वलि

उर्वेशा

उर्वेशा
विवालि

मलम

वृक्षकाष्ठ



नाय

स्वस्ति श्रीमन्मंगलमूर्तये नमः

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः

स्वस्ति

स्वस्ति श्रीमन्मंगलमूर्तये नमः

शामातामनामाया

शामाता

शामातामनामाया

२०



शाम

गोकुलानन्दप्रसन्नक

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः

गोकुलानन्दप्रसन्नक

हृदयान्त

शाम

शामातामनामाया

शामातामनामाया शारंगेश्वरे

स्वस्ति श्रीमन्मंगलमूर्तये नमः